भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ५०

सोमवार १५ सितम्बर, '६९

अन्य पृष्ठों पर

राजगीर सर्वोदय-सम्मेलन में...
—एस० जगन्नाथन् ६३४
आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई; एक सच्चा इंसान चला गया —सम्पादकीय ६३५
शिक्षक राजनीति से मुक्त होकर नयी शक्ति पैदा करें —विनोबा ६३७
इन्कलाबी इंसान : हो ची मिन्ह
—कपिल अवस्थी ६३९
अद्यतन औद्योगिक व्यवस्था...
—अवध प्रसाद ६४०
स्व० रावसाहब : भव्य व्यक्तित्व, कृतार्थ जीवन —गोविंदराव देशपांडे ६४३
अहमदाबाद में सर्वोदय-पात्र
—काकूभाई दोशी ६४५

अन्य स्तम्भ

आन्दोलन के समाचार

जब आस्तिक कहलानेवाले ही आपस में झगड़ते रहेंगे तो नास्तिकों से मुकाबिला कैसे हो सकेगा ? इसलिए बहुत जरूरी है कि भिन्न-भिन्न धर्मों में भिन्नता के जो अंश हैं उन पर जोर न देकर समान अंशों पर ही जोर दिया जाय। —विनोबा

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी—१ उत्तरप्रदेश
फोन : ४२८५

क्या आप वर्गयुद्ध को टाल सकते हैं ?

प्रश्न—यदि आप मजदूरों, किसानों और कारखाने के श्रमिकों को लाभ पहुँचाना चाहते हैं, तो क्या आप वर्गयुद्ध को टाल सकते हैं ?

उत्तर—बेशक मैं टाल सकता हूँ, बशर्ते कि लोग अहिंसक मार्ग का अनुसरण करें। अहिंसक तरीके में हम पूँजीपति का नहीं, बल्कि पूँजीवाद का नाश करना चाहते हैं। हम पूँजीपति से कहते हैं कि वह अपने को उन लोगों का संरक्षक समझे, जिन पर उसकी पूँजी बनने, टिकने और बढ़ने का दारमदार है। श्रमिक को पूँजीपति के हृदय-परिवर्तन की प्रतीक्षा करने की भी जरूरत नहीं है। यदि पूँजी में बल है तो श्रम में भी है। बल का उपयोग विनाशक और रचनात्मक, दोनों प्रकार से किया जा सकता है। दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं। ज्योंही मजदूर अपनी ताकत को पहचान लेता है, त्यों ही पूँजीपति का गुलाम बना रहने के बजाय उसका बराबरी का हिस्सेदार बनने की स्थिति में आ जाता है। यदि वह अकेला ही मालिक बनना चाहेगा, तो वह सम्भवतः सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी को मार डालेगा। बुद्धि और अवसर की असमानताएँ अन्त काल तक बनी रहेंगी।

नदी के किनारे रहनेवाले आदमी के लिए सूखी मरुभूमि में रहनेवाले की अपेक्षा फसल उगाने का अवसर सदा ही अधिक रहेगा। परन्तु यदि असमानताएं हमारे सामने हैं, तो मूलभूत समानताओं को भी हमें अपनी पहुँच के बाहर नहीं समझना चाहिए। पशु-पक्षियों की तरह ही प्रत्येक मनुष्य को जीवन की आवश्यकताओं के लिए समान हक है। और चूँकि प्रत्येक अधिकार के साथ अनुरूप कर्तव्य और उस पर होनेवाले हमले को रोकने का अनुरूप इलाज लगा हुआ है, इसलिए मूल प्रारंभिक समानता की प्राप्ति और रक्षा करने के लिए उन कर्तव्यों और उपायों को खोज निकालने की ही बात रह जाती है। यह अनुरूप कर्तव्य है अपने हाथ-पैरों से परिश्रम करना और वह अनुरूप उपाय है उस आदमी से असहयोग करना, जो मुझसे मेरे परिश्रम का फल छीन लेता है।

मेरा असहयोग वह जो अन्याय कर रहा होगा उसके प्रति उसकी आँखें खोल देगा। मुझे यह डर रखने की जरूरत नहीं कि मेरे असहयोग करने पर कोई और मेरा स्थान ले लेगा। क्योंकि मुझे अपने साथियों पर इतना असर डाल सकने की आशा है कि वे मेरे मालिक के अन्याय में सहायता न दें।

मो० क० गांधी

'यंग इण्डिया' : २६-३-'३१; पृष्ठ ४९

www.vinoba.in

राजगीर सर्वोदय सम्मेलन में ग्रामदानी गाँव के प्रतिनिधि अधिकाधिक संख्या में भाग लें

—सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष की अपील—

राजगीर (बिहार) में अक्तूबर २५ से २८ तारीख तक जो सर्वोदय समाज का सम्मेलन चलेगा, वह इस बार बड़ा महत्त्व रखता है। राजगीर इतिहास-प्रसिद्ध है। भगवान बुद्ध की पुण्य स्मृति में स्तूप भी इस अवसर पर वहाँ बनाया जा रहा है। २५-२६ को शान्ति-प्रेमियों का सम्मेलन चलेगा जिसमें कई राष्ट्रों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। उसके बाद २७ और २८ को सर्वोदय सम्मेलन चलेगा, यह आप जानते ही हैं। इस प्रकार से इस बार का यह सर्वोदय सम्मेलन 'अन्तर्राष्ट्रीय सर्वोदय सम्मेलन' के रूप में आयोजित हो रहा है।

पिछले १८ साल के आन्दोलन के इस आरोहण में **बिहार राज्यदान** की प्राप्ति बहुत ही महत्त्व की है। यह ऐसा सम्मेलन है जिसमें सर्वोदय के सेवक और प्रेमी गर्व और उत्साह से भाग लेंगे। यह हमारे लिए और भी खुशी की बात है कि गांधीजी के दो परम अनुयायी और अहिंसा के अवतार सीमांत गांधी बादशाह खान और पू० विनोबाजी भी इसमें भाग लेनेवाले हैं। गांधी शताब्दी के इस वर्ष में राजगीर का यह सम्मेलन ग्रामस्वराज्य तथा विश्व-शान्ति के लिग प्राणदायी होगा।

अब तक सर्वोदय-सम्मेलन इस बात का मौका बनता था जिसमें सर्वोदय सेवक आपस में मिलें, आत्मिक प्रेम और सौहार्द बनायें तथा अपने अनुभवों के आधार पर भविष्य का कार्यक्रम बनावें, व्यूह-रचना करें। आज आन्दोलन जिस स्टेज पर आ पहुँचा है अथवा जो इसकी क्रमिक वृद्धि हुई है, उससे ग्रामस्वराज्य की सम्भावना दृढ़ हो गयी है। इसलिए इस सन्दर्भ में ग्रामदान-आन्दोलन में भाग लेनेवाले ग्रामवासियों को भी सम्मेलन में सक्रिय भाग लेना आवश्यक हो जाता है। सैकड़ों ग्रामवासी ऐसे हैं जिन्होंने तत्परतापूर्वक ग्रामदान-आन्दोलन में भाग लिया है और ग्रामदान के बाद निर्माण-कार्य में भी हिस्सा ले रहे हैं। हर प्रदेश में ऐसे ग्रामवासी हैं जो ग्रामस्वराज्य के आदर्श में विश्वास रखकर ग्रामसभाएँ संगठित कर सेवा कर रहे हैं। ऐसे ग्रामदानी लोगों को राजगीर सम्मेलन में बुलाया जाय तो उनको नया उत्साह, प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलेगी। ग्रामदान-आरोहण और निर्माण-कार्य को जन-आन्दोलन का रूप देने के लिए इन ग्रामवासियों को हमें इस सम्मेलन में बुलाना चाहिए।

इसलिए सभी राज्यों के ग्रामदानियों के प्रतिनिधि इसमें भाग ले सकें, इसका इन्तजाम किया जा रहा है। आपके प्रदेश में ऐसे ग्रामवासियों को, जो आन्दोलन, निर्माण-कार्य तथा ग्रामसभा के प्रबन्ध में काम कर रहे हैं, उनको चुनकर सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रेरित करने का इन्तजाम कीजिये। हर प्रदेश से एक सौ तक ऐसे प्रतिनिधि भेजे जा सकते हैं इसलिए कृपया आप ऐसे योग्य प्रतिनिधियों को सम्मेलन में भेजने की कोशिश कीजिये। सम्मेलन में उनके आने-जाने का करीब एक सौ रुपये तक खर्च हो सकता है। इसका इन्तजाम ग्रामसभा कर सकती है या प्रतिनिधि स्वयं उठा सकते हैं। उनके आने-जाने में १०-१२ दिन लग सकते हैं। उनकी अनुपस्थिति में कृषि-कार्य रुक न जाय, इसका भी प्रबन्ध करना होगा। इन सब बातों का ख्याल रखकर आप शीघ्र ही प्रबन्ध करेंगे, ऐसा विश्वास करता हूँ। इनके लिए सर्व सेवा संघ की ओर से एक सौ रेलवे-कन्सेशन फार्म आपके पास भेजे जायेंगे। सम्मेलन में भाग लेनेवाले ग्रामदानवासियों से सम्बन्धित निम्न विवरण कृपया सर्व सेवा संघ के गोपुरी कैम्प कार्यालय वर्धा, महाराष्ट्र के पते पर भिजवाने का कष्ट करेंगे :—

१—सम्मेलन में भाग लेनेवाले ग्रामदानियों के नाम

२—ग्राम और पूरा नाम

३—उनका व्यवसाय तथा सहायक अन्य उद्योग

४—आन्दोलन में उनका भाग

५—निर्माण-कार्यक्रम में उनकी लगन और साधना

६—ग्रामसभा में उनकी जिम्मेवारी

७—अन्य विवरण।

सम्मेलन के बीच में ग्रामदानियों की सभाएँ फुरसत के अनुसार हो सकती हैं। आवश्यकता हो तो उनकी एक अलग विशेष सभा २९ ता० को कराने का विचार है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके प्रान्त से आन्दोलन में अनुभव रखनेवाले सुयोग्य ग्रामदानी गाँवों के लोग सम्मेलन में भाग लेकर उसको सफल बनायेंगे। — एस० जगन्नाथन

कैम्प—किलवेलूर (तंजौर) अध्यक्ष

१ सितम्बर, १९६९ सर्व सेवा संघ

भूल-सुधार

'भूदान-यज्ञ' के पिछले ८ सितम्बर'६९ के अंक में अंतिम पृष्ठ के अंतिम समाचार—रांची में 'विनोबा-जयन्ती' में दूसरी लाइन में भूल से ७४ की जगह ७५ छप गया है। पाठकगण क्षमा करेंगे। सम्पादक

'भूदान-यज्ञ' का गांधी-जयन्ती-विशेषांक

मेरे सपनों का भारत

और

आखिरी वसीयत

अपने पूर्व विशेषांकों की विशिष्ट परम्परानुसार **'भूदान-यज्ञ'** उपर्युक्त शीर्षक से २ अक्तूबर '६९ को अपनी मौलिकता-सहित प्रकाशित हो रहा है। जिन्हें विशेषांक की अधिक प्रतियाँ चाहिए वे शीघ्र सूचित करें। पूर्व तैयारी के लिए भूदान-यज्ञ का २२ सितम्बर का अगला अंक प्रकाशित नहीं होगा।

—व्यवस्थापक

अग्रलेख

आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई

प्रधानमंत्री ने सलाह दी है—सलाह नहीं आवाहन किया है—कि देशवासियों को एक होकर आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई लड़नी चाहिए।

कल एक बूढ़े सज्जन मिलने आये। कह रहे थे, राजपूत हूँ। उमर ६५ साल से कम नहीं रही होगी। मैंने पूछा : बैठिए, कैसे चले ? बोले : 'बूढ़ा हो गया हूँ। हाथ-पैर चलते नहीं, लेकिन पापी पेट मानता नहीं। मेरे लायक कोई काम हो तो दीजिए।'

तीसरे पहर एक दूसरे सज्जन आये। शिक्षक थे, कहने लगे : 'मेरा बेटा बी० ए० पास करके बैठा है। कोई काम निकले तो ध्यान रखिएगा। जवान लड़की और बेकार युवक, ये दोनों परिवार के लिए सिर-दर्द होते हैं।'

धान की रोपाई हो चुकी है। अब मजदूरों के लिए कोई काम नहीं है। धान पकने को तीन महीने बाकी है। पकेगा तो कटाई होगी, काम मिलेगा। तबतक गुजर कैसे हो ? यह हाल तब है जब खेती का खेत में होनेवाला लगभग सारा काम पेशेवर मजदूरों के ही जिम्मे रहता है। अगर गाँव के सभी लोग, जो काम कर सकते हैं, काम करने लगें तो कितने लोगों को कितने दिनों का काम मिलेगा, कहना कठिन है।

बलभद्र एक उत्साही युवक है। गाँव के काम में खूब दिलचस्पी लेता है। शान्त, गंभीर, प्रगतिशील है। एक साल दौड़धूप करके गाँव की नदी में सीमेन्ट रिंग का कुँआ बनाकर पम्प बिठवाया है, और लोहे की पाइपें बिछवाकर खेत-खेत में पानी पहुँचाया है। परसों आया था। पूछा : 'अब गाँव की खेती का क्या हाल है ?' कहने लगा : 'मक्का, मक्के के बाद धान, धान के बाद गेहूँ, तीन फसलों का ठिकाना हो गया है। नदी छोटी है, गर्मी में पानी नहीं दे पाती, नहीं तो गरमा धान भी हो जाता।' जिस गाँव के लिए आज तक एक फसल का होना भी मुश्किल था, वह अब तीन फसलें काटने लगा है, और चौथी की बात सोचता है। खुद बलभद्र के पास जमीन कुछ बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन बढ़िया कपड़े की बुश-शर्ट, और पैन्ट पहता है। मैंने पूछा : 'बलभद्र, तुम्हारे गाँव में खेती इतनी अच्छी हो गयी, लेकिन क्या मजदूर की मजदूरी भी बढ़ी है ?' बोला : 'नहीं'। मैंने फिर पूछा : 'क्या अब तुम्हारे गाँव में, मजदूर को तीस दिन, बारह महीने, काम मिलने लगेगा ?' बोला : 'नहीं, बल्कि देखता तो यह हूँ कि लोग अपने-आप ज्यादा-से-ज्यादा काम कर लेने की कोशिश करने लगे हैं। कभी-कभी मजाक में ट्रैक्टर लाने की बात भी हो जाती है। कहते हैं मजदूर न लगे तो मजदूरी बचे।'

ये चार पहलू हैं उस लड़ाई के, जो गाँव-गाँव, घर-घर में छिड़ी हुई है। पेट की लड़ाई है—अच्छा खाने की नहीं, पेट भरने की। एक-एक आदमी इसी पेट की लड़ाई में जूझ रहा है। इस लड़ाई में अपनी आहुति देनेवाले शहीदों को ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। हर जाति के, हर आयु के, हर लिंग के शहीद हर जगह ढेर-के-ढेर मिलेंगे। क्या पेट की इस लड़ाई को आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई भी कह सकते हैं ?

शायद प्रधानमंत्री को इन 'शहीदों' की जरूरत नहीं है। उनके मन में आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई की कोई दूसरी कल्पना होगी। उस लड़ाई को, लड़नेवालों की भी क्या कमी है ? राजनीतिक दलों से पूछिए, कहेंगे, 'हम आर्थिक स्वतंत्रता की ही लड़ाई तो लड़ रहे हैं।' **अभी कुछ दिन पहले संसद के सदस्यों ने पेट की लड़ाई लड़नेवालों की 'महानुभूति' में अपना दैनिक भत्ता ३१ रुपये से ५१ रुपये कर लिया। क्या करें बेचारे ? वे और कर ही क्या सकते थे ?**

देश के कुछ सुदूर गाँवों में नक्सालवादी मार-काट पर उतारू हो गये हैं। नारा लगाते हैं—'वोट नहीं चोट।' उनसे पूछिए, कहेंगे, 'हम आर्थिक गुलामी से मुक्त होना चाहते हैं।' उनकी लड़ाई मुक्ति की लड़ाई है। लेकिन उनकी लड़ाई प्रधानमंत्री की सरकार के लिए 'शान्ति और सुव्यवस्था' का प्रश्न है, और इसी नाते उन्होंने इन लड़ाकुओं के पीछे अपनी पुलिस छोड़ रखी है।

दूसरी लड़ाई दूसरे ढंग से चल रही है। १८ साल से अनवरत, जाड़ा, गरमी, बरसात में समान सातत्य के साथ, एक फकीर देश के गाँव-गाँव में यही कहता घूम रहा है कि 'स्वतंत्र देश में हमारे गाँव परतंत्र क्यों हैं ?' वह गाँववालों से कहता है, 'ज़मीन की मालकियत मिटाओ, अपनी पूंजी इकट्ठा करो, ग्रामसभा बनाकर गाँव में ग्रामस्वराज्य कायम करो।' यह ग्रामस्वराज्य गाँवों की 'स्वतंत्रता' नहीं तो और किस चीज की लड़ाई है ? लेकिन इस लड़ाई से भी प्रधानमंत्री को मतलब नहीं। उनके लिए जैसे गाँव की यह लड़ाई जैसे कुछ है ही नहीं।

ज़मींदारी गयी तो कहा गया किसानों के गले की फाँसी कटी। सन् १९५१ में जब पहली पंचवर्षीय योजना शुरू हुई तो कहा गया कि कुछ वर्षों में एक-एक भारतवासी मोहताजी से मुक्त हो जायगा। इतने वर्षों के बाद अब बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया है तो फिर कहा जा रहा है कि आर्थिक दासता का एक जबरदस्त किला टूट गया। एक के बाद दूसरे ये जितने काम किये जा रहे हैं वे सब गरीब की मुक्ति के लिए किये जा रहे हैं !

स्वतंत्रता के बाईस वर्षों में बहुत कुछ हुआ किन्तु यह स्पष्ट नहीं हुआ कि इस देश में रहनेवाले करोड़ों नर-नारियों के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ क्या है ? समाजवाद की बात इतनी बार इतनी तरह से इसलिए कही गयी है कि जनता को विश्वास हो जाय कि समाजवाद ही आर्थिक स्वतंत्रता है। लेकिन अभी तक समाजवाद का एक ही रूप सामने आया है। वह है सरकारवाद का। सरकार अपने अधिकार और अपनी मालकियत बढ़ाती चली जा रही है। नौकरशाही बेतहाशा बढ़ती जा रही है। जनता का जीवन आज पहले से भी अधिक सरकार, उसके नेताओं और नौकरों के हाथ में चला गया है। हताश जनता सरकार और उसकी

योजनाओं से दूर हटती चली जा रही है। समझ में नहीं आता कि जो 'परतंत्र' हैं उन्हें अलग रखकर स्वतंत्रता की लड़ाई कैसे लड़ी जायगी, और जो लाखों गाँवों में फैला हुआ इस देश का समाज है उसे अलग रखकर समाजवाद की लड़ाई कैसे लड़ी जायगी? लेकिन लड़ी तो जा रही है!

www.vinoba.in

आर्थिक स्वतंत्रता के नाम में पूंजीवाद बढ़ा; उसीके नाम में साम्यवाद आया; और अब उसी नारे पर मिश्रित अर्थनीति के लोक-कल्याणकारी राज्य की रचना की जा रही है। पूंजीवाद ने आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ किया भूखों मरने की स्वतंत्रता; साम्यवाद ने किया स्वतंत्रता की बात भूलकर जीते रहने की स्वतंत्रता; अब हमारा राज्य अर्थ कर रहा है। बड़े-बड़े नारों पर जीने या मरने दोनों की स्वतंत्रता। पश्चिम के संघर्ष पूरब में फैली हुई पेट की लड़ाई को देखकर यह मानने को विवश होना पड़ रहा है कि आर्थिक स्वतंत्रता का सही अर्थ है बाजार की शक्तियों, साधनों, और सम्बन्धों से मुक्ति, ठीक उसी तरह जैसे राजनीतिक स्वतंत्रता का सही अर्थ है आज की समूची राजनीति से मुक्ति, जिस पर नागरिक का कोई अंकुश नहीं है।

प्रधानमंत्री इस बारे में क्या सोचती हैं? उनका सुझाव क्या है? पेट की लड़ाई लड़नेवाली, और रोज-रोज हारती चली जाने वाली जनता उनकी आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई में कैसे शरीक हो? वह क्या करे? क्या करे मजदूर, क्या करे बँटाईदार, छोटा किसान, दस्तकार, और बेकार युवक? क्या यही कि जो कुछ हो रहा है, होने दे और सरकार को माई-बाप मामता रहे? ठोकरें खा-खाकर भी उन्हींका भरोसा करता रहे, जो अब भरोसे के लायक रह नहीं गये हैं? कोई बताये कि इन लोगों को क्या करना चाहिए?

आर्थिक स्वतंत्रता का एक दूसरा अर्थ भी है। वह है समान सामाजिक संरक्षण और तुल्य पारिश्रमिक। हर व्यक्ति को समाज (जिसमें सरकार भी शामिल है) की ओर से जीविका का समुचित साधन और शिक्षण मिलना चाहिए। जो जहाँ काम करता है उसे उस जगह निर्णय का अधिकार होना चाहिए। अंत में, विषमता एक सीमा से आगे नहीं बढ़नी चाहिए। श्रम से मिलनेवाले पारिश्रमिक में विषमता ऐसी हर्गिज न हो कि श्रम और कौशलवाले मनुष्य की स्वतंत्रता विषमता के नीचे दब जाय।

ये गुण हैं स्वतंत्रता के। लेकिन इन गुणों का प्रकट होना सम्भव नहीं है। प्रश्न केवल नीयत के नेक होने का नहीं रह गया है। नीयत के साथ-साथ सही हिकमत होनी चाहिए और उस हिकमत पर चलने की जरूरी हिम्मत भी होनी चाहिए। लेकिन किसी ओर दिखाई नहीं दे रहा है कि दिल्ली या किसी दूसरी राजधानी में कोई सही हिकमत अपनायी जा रही है। प्रधानमंत्री खुद कई बार कह चुकी हैं कि प्रशासन का यह निकम्मा ढाँचा, और शिक्षण की यह सड़ी-गली पद्धति देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। राजनीति जोड़ ली जाय तो दोषों की कमी पूरी हो जायगी!

जनता जानना चाहती है कि प्रधानमंत्री देश को इन त्रिदोषों से मुक्त करने के लिए क्या कर रही हैं। अगर यह साफ-साफ मालूम हो जाय तो जनता उनकी लड़ाई को उत्साहपूर्वक अपनी लड़ाई मान लेगी। पहले मालूम तो हो कि कौनसी लड़ाई लड़ी जा रही है! •

एक सच्चा इंसान चला गया

जिसने जाना उसने प्यार किया!

शायद ही कोई हो जिसने रावसाहब को जाना हो और उन्हें प्यार न किया हो। जिसने उन्हें एक बार भी जाना उसने उन्हें जिन्दगी भर प्यार किया। और, रावसाहब ने जिसे जान लिया उसको उन्होंने हमेशा प्यार दिया, दिल खोलकर दिया। न जाने कितने लोगों से हर उम्र, हर जाति, हर धर्म, हर भाषा और राज्य के लोगों से—उनका दिल का—दिल से सम्बन्ध था। उनकी बाँहें दिल से लगाने के लिए हमेशा खुली ही रहती थीं। इसीलिए रावसाहब का जाना ऐसा लगता है जैसे कोई अपना प्यारा-से-प्यारा चला गया।

और, उनका प्यार भी कितना परिष्कृत और सुसंस्कृत था! हम सब प्यार करना चाहते हैं लेकिन प्यार करना जानते कितने हैं? प्यार पाना चाहते हैं लेकिन प्यार के पात्र कितने होते हैं? रावसाहब ने कभी पात्रता देखकर किसीको प्रेम का पुरस्कार नहीं दिया। जो मनुष्य था वह उनके प्रेम का पात्र था। स्वार्थ, संदेह, संकीर्णता का मैल अकसर प्रेम को घेर लेता है, किन्तु रावसाहब ने अपने मन में इस मैल को कभी घुसने नहीं दिया।

रावसाहब नेता थे, विद्वान थे, बहुत कुछ थे, किन्तु सबसे बढ़कर वह इंसान थे। असंख्य इंसानों की दुनिया में सच्चे इंसान की कितनी कमी है! रावसाहब पटवर्धन क्या गये, एक सच्चा इंसान चला गया। •

लेखकों से

- 'भूदान-यज्ञ' में प्रेषित अस्वीकृत रचनाओं की वापसी तभी सम्भव है, जब रचना के साथ आवश्यक डाक-टिकट भेजे जायेंगे।
- रचनाओं की स्वीकृति-सूचना रचना प्राप्त होने के दो सप्ताह के अन्दर हम भेज देते हैं।
- 'भूदान-यज्ञ' में प्रकाशित लेख हम अपने सुहृदय लेखकों की ओर से अहिंसक क्रान्ति के अभियान में एक योगदान मानते हैं। किसी प्रकार का पारिश्रमिक देने की स्थिति हमारी नहीं है। प्रकाशित लेखवाला अंक हम लेखक को सप्रेम भेंट करते हैं।
- 'भूदान-यज्ञ' जिस अहिंसक क्रान्ति का संदेशवाहक है, उसमें योगदान करनेवाली सामग्री ही प्रकाशित होती है। —सम्पादक

www.vinoba.in

शिक्षक राजनीति से मुक्त होकर नयी शक्ति पैदा करें

— आचार्य विनोबा की शिक्षकों से प्रेरक अपील —

भगवद्‌गीता में भी यह सिखाया गया है : 'यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरोजनाः' 'श्रेष्ठ पुरुष जैसा व्यवहार करते हैं वही देखकर बाकी के लोग करते हैं।' श्रेष्ठ पुरुषों का व्यवहार ज्ञानपूर्वक होता है, लेकिन बाकी के लोगों का व्यवहार श्रद्धापूर्वक होता है। जहाँ श्रेष्ठ पुरुष ज्ञानपूर्वक पहुँचता है, वहीं श्रद्धापूर्वक करनेवाला भी पहुँचता है। जो कार्य राम कर सकते हैं वही काम श्रद्धा के कारण हनुमान भी कर सकते हैं। बाकी के जो शिक्षक हैं, वे श्रद्धापूर्वक काम करते हैं और आप शिक्षक-प्रशिक्षक माने जाते हैं तो आप पर ज्यादा जिम्मेवारी है। जो आप लोग हैं, वे ज्ञानपूर्वक करेंगे तो बाकी के लोग आपके पीछे आयेंगे। रामायण में एक प्रसंग है कि लक्ष्मण मूर्छित हो गये लड़ाई में। रामजी चिन्तित हो गये। वैद्यराज आये। उन्होंने कहा कि अमुक वनस्पति इसमें काम देगी जो कि बहुत दूर अमुक पहाड़ पर है। उसको लाकर देंगे तो काम बनेगा। हनुमान को कहा गया कि तुम जाकर आओ। तो वे तुरन्त चले गये और सारा-का-सारा पहाड़ उठा लाये और फिर कहा कि हमें इसकी जानकारी नहीं है कि वह कौनसी वनस्पति है, आप ही ढूंढ़ निकालिए। यह है हनुमान का पराक्रम !

ज्ञान और श्रद्धा

कभी-कभी तो ऐसा होता है कि श्रद्धावान मनुष्य तर जाता है और ज्ञानवान जो है, वह डूब जाता है। एक ज्ञानी पुरुष थे। उन पर किसीने अत्यन्त श्रद्धा रखी। एक दिन उस ज्ञानी ने उपदेश दिया कि यदि मनुष्य में श्रद्धा हो तो वह पाँव-पाँव से नदी तैर जा सकता है। वह श्रद्धालु एक दिन नदी में बाढ़ आयी थी तो उस पार वह श्रद्धा रखकर चला गया। उसने बिलकुल सोचा ही नहीं कि पानी मुझे डुबायेगा। यह बात उस ज्ञानी को मालूम हुई तो वह भी एक दिन पार होने के लिए चला। उसको इसका ज्ञान था कि पानी का गुण डुबाना है तो उनको शंका थी। आखिर वे डूब गये। लेकिन श्रद्धावाले को शंका तनिक भी नहीं थी, इसलिए वह तर गया। यह तो एक कहानी आपको कही कि जो बात मैं कहने जा रहा हूँ, उसकी ओर आपका ध्यान जाय।

राजनीति और शिक्षक

अभी हमारे सामने गया जिले के जो शिक्षा-पदाधिकारी थे, वे बैठे हुए हैं। वहाँ से सेवा-मुक्त होकर ये यहाँ आये हैं और स्कूल में प्रिंसिपल हैं। जब मैं गया में था तो इनसे कहा कि गया जिला सारा-का-सारा ग्रामदान में आना चाहिए और शिक्षकों को इसमें लग जाना चाहिए। वहाँ सर्वोदय के ज्यादा कार्यकर्ता नहीं हैं। लेकिन शिक्षकों की मदद से सारा-का-सारा जिला पौने दो महीने में ग्रामदान में आ गया। वह भाई यहाँ बैठे हैं। अब इनको दुबारा काम करने का अवसर मिल रहा है। आप लोगों ने जगह-जगह काम शुरू किया है यह तो ठीक ही है, लेकिन उसके साथ-साथ आपको एक बात और करनी चाहिए, जिससे आपकी शक्ति बढ़ेगी। शिक्षक राजनीति से मुक्त हों। आज शिक्षकों पर राजनीति हावी हो गयी है। जो राजनीतिज्ञ हैं, उनके दिमाग को राजनीति इस तरह से बहकाती है कि वहाँ पर सत्य और असत्य का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। प्रत्यक्ष में कुछ कहते हैं, मन में कुछ रखते हैं, और करते कुछ और हैं। उनके यहाँ झूठ का बोलबाला है। इस झूठ के मामले में कोई भी पार्टी किसी पार्टी से कम नहीं है। इस मामले में अगर नम्बर दिये जायं तो सभी पार्टियाँ 'फर्स्ट क्लास फर्स्ट' नम्बर पायेंगी।

राजनीति के कारण शिक्षकों की ताकत खड़ी नहीं होती। शिक्षकों को ३० साल तक सेवा करने का मौका मिलता है, और राजनीतिज्ञों को ५ साल का। यदि वह भी ठीक चले तो, नहीं तो आपने बिहार में देखा ही कि इतने ही समय में दो-तीन बार मिनिस्ट्री उलटी-पलटी। यहाँ पर राज्यपाल का शासन चल रहा है, ऐसी हालत है। यानी उनकी मुद्दत ज्यादा-से-ज्यादा ५ साल की और आपकी ३० साल की है। और आपके जाने के बाद आपके ही सिखाये हुए विद्यार्थी शिक्षक बनेंगे। इसका मतलब है कि आपकी परम्परा चलेगी। आपने ग्रामदान का काम उठा लिया है तो इससे आपकी शक्ति बढ़ेगी और गाँववालों की उससे बुद्धि बढ़ेगी। आपके द्वारा जो उनको मदद मिलेगी उससे उनकी बुद्धि का विकास होगा। लेकिन इस सबके लिए आपको दलीय राजनीति से मुक्त होना चाहिए। यह मैं बार-बार दुहराऊंगा। भारत में अगर सोचनेवाली कोई जमात है तो वह शिक्षकों की ही जमात है। यहाँ बिहार में ७० हजार गाँव हैं और पौने दो लाख शिक्षक हैं। इसका अर्थ हुआ कि एक गाँव के पीछे ढाई शिक्षक आते हैं। दूसरे प्रान्तों में तो शिक्षा की प्रगति के कारण तीन-चार आते होंगे। उसका अर्थ है कि सारे भारत में शिक्षक-जमात पैदा हुई है, वह अगर तय करती है कि हम राजनीति में नहीं पड़ते और लोकनीति में विश्वास करते हैं, और उसके लिए काम करते हैं, तो आपकी आवाज में जोर आयेगा।

शिक्षक की अपेक्षित योग्यता : माँ का प्यार, आचार्यों का ज्ञान

दूसरी बात यह है कि आप जिन बच्चों को सिखायेंगे उनके लिए माता के जैसा प्रेम चाहिए और आचार्यों-जैसा ज्ञान चाहिए। माता में ज्ञान नहीं होता, प्रेम होता है। लेकिन आपमें दोनों चाहिए। लड़का माता का प्रेम हासिल करता है, लेकिन सलाह नहीं। परन्तु आपसे वह सलाह भी लेगा। इसलिए वात्सल्य-भाव से सिखाना आपका धर्म है। अगर आप यह अच्छी तरह से करेंगे तो पुराने जमाने में जो गुरु होता था, उसका दर्शन होगा। जहाँ कोई उसको मुश्किल आ गयी कि तुरन्त वह गुरु के पास सलाह के लिए जाता था। ऐसे शिक्षकों की, गुरुओं की सलाह पर भारत रहा। मीराबाई को जब मुसीबत आयी तो उन्होंने उचित समझा कि किसीकी सलाह लेनी चाहिए। तुलसीदास की सलाह लेने का निर्णय किया, क्योंकि उस समय उनका भारत पर असर था। वह बहुत प्रसिद्ध पत्र है। तुलसीदासजी ने उनको सलाह दी—

"जाके प्रिय न राम बैदेही। तजिये ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही।" यों कहकर उनको सलाह दी और यह भी लिख दिया—"ये तो मतो हमारो।" मतलब यह कि आपको जँचे तो यह करिएगा। तुलसीदासजी की सलाह मानकर उन्होंने घर छोड़ा। जो भी हो, मालूम नहीं किस जमाने में यह हुआ, लेकिन लोगों में यह किस्सा प्रचलित है।

तो जिस प्रकार से मीरा बाई को यह सलाह काम आयी उस प्रकार से औरों को भी गुरु की सलाह काम में आयी। ऐसे गुरु जब भारत में थे तब भारत उन्नति के शिखर पर था। वह लोगों को शिक्षण देते थे और बिलकुल निरपेक्ष भाव से सलाह भी देते थे। शंकराचार्य, वल्लभाचार्य आदि सन्तों की जमात सब दूर घूमती थी। बाबा की भी आज जो महिमा है वह उसके घूमने के कारण है, क्योंकि जिस जमाने में मोटर चलती है, उसमें भी वह पैदल घूमा। लेकिन पुराने जमाने में कौन नहीं घूमा? तुलसीदासजी ने भगवान से प्रार्थना की—"तुलसी तव तीर-तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मतिदेहि..." हे गंगे, मुझे ऐसी बुद्धि दे कि मैं तुम्हारे किनारे-किनारे घूमते हुए रामजी का गुण गाता रहूँ। तुलसीदासजी निरन्तर घूमते रहे। कबीर भी ऐसे ही घूमते रहे। मैं जब दक्षिण में गया था तो वहाँ के लोगों ने कहा कि कबीर दक्षिण के थे। उत्तरवाले कहते हैं कि कबीर उत्तर के थे। पश्चिमवाले कहते हैं कि वे पश्चिम के थे। इस प्रकार से सारे भारत में घूमे। नानकजी मक्का में गये थे। वहाँ पर वे एक स्थान पर लेटे थे और उनका पैर मस्जिद की तरफ पड़ता था, जहाँ नहीं पड़ना चाहिए था, जो पवित्र स्थान माना जाता है। लोगों ने इसकी शिकायत की तो नानकजी ने कहा कि तुम मेरे पैर को उस तरफ हटा दो जिस तरफ ईश्वर उपस्थित न हो, मैं अपने पाँव उधर रख सकता हूँ। लोग उनके पैरों को दूसरी दिशा में रखने लगे, लेकिन जिधर वे रखते उधर ही मस्जिद आ जाती। तब मक्कावालों के ध्यान में आया कि यह सन्त भारत से आया है, इसको ऐसा ज्ञान है जो हम लोगों को भी नहीं है। यों कहकर उनका अत्यन्त सम्मान किया।

तुलसीदास की विशिष्ट देन

आज हमको किसीने याद दिलायी कि आज तुलसीदासजी का प्रयाण-दिन है। तुलसीदासजी ने उत्तर भारत को बचाया। क्योंकि उस जमाने में हिन्दुओं में अनेक जमातें परस्पर-विरोधी काम कर रही थीं। कोई एक देवता को पूजता था, कोई दूसरे देवता को, ऐसे नाना देवताओं को पूजनेवाले पचासों पंथ हो गये थे और उनमें परस्पर-झगड़े होते थे। उस समय मुसलमान आये और उनके साथ इस्लाम धर्म आया। इस्लाम ने समझाया कि परमात्मा एक है। लोगों में इससे बुद्धि-भेद हो गया। उस जमाने में तुलसीदासजी आये। उन्होंने 'रामायण' पेश कर राम को बढ़ाया और कहा कि सारे देवता राम के सेवक हैं। अनेक देवताओं का सम्मिलन रामजी में लगा दिया। रामजी ही परमात्मा हैं, ऐसा उन्होंने सारे भारत में फैलाया। लोगों की बुद्धि एकाग्र हो गयी। यह उन्होंने सबसे श्रेष्ठ काम किया। मेरा मानना है कि उत्तर भारत में गौतम बुद्ध के बाद तुलसीदासजी के जैसे महान कोई नहीं हुआ। उनका आज स्मरण-दिन है। बड़ा आनन्द हुआ कि थोड़ी कुछ महिमा उनकी आप लोगों के बीच गायी। उनकी 'विनय-पत्रिका' से चुने हुए अंश निकालकर एक पुस्तक मैंने तैयार की है, जिसका नाम 'विनयांजलि' है। उस पुस्तक में तुलसीदासजी के बारे में मेरी प्रस्तावना है।

यह सब मैंने इसलिए कहा कि आपके पूर्वज कौन हैं, यह मालूम हो। किसी राजनीतिज्ञ को पूछगें कि आपके पूर्वज कौन थे? तो वह अकबर सम्राट, चन्द्रगुप्त सम्राट के नाम बतायेंगे। लेकिन आपको पूछा जायेगा तो आप कबीर, तुलसीदास, नानक आदि संतों और आचार्यों का नाम लेंगे। आप उनकी परम्परा में हैं, राजनीतिज्ञों की परम्परा में नहीं। वह हैसियत आपको दुबारा प्राप्त हो, भारत में आपकी बुलन्द आवाज हो, आपकी ताकत बने, इसके लिए आपको राजनीति से मुक्त होना होगा। आप सब सर्वसम्मति से किसी ज्वलन्त प्रश्न पर अपनी राय जाहिर करते हैं, इसका दर्शन होना चाहिए। आपको तीन बातें करनी हैं। पहला गाँव-गाँव से संपर्क करना, उनकी सेवा करना, दूसरी—राजनीति से मुक्त हो जाना। राजनीति के बारे में आपका गहरा अध्ययन हो और समय-समय पर अपनी सर्व-सम्मत राय जाहिर करें, लेकिन दलीय राजनीति में नहीं पड़ें, और तीसरी—अपने लड़कों को माता के समान प्रेम देना तथा आचार्यों के समान ज्ञान देना। दोनों चीजों से उनको भर दें, यह आपका काम रहेगा। यह करने के लिए आपको चौथी चीज करनी होगी कि अपना अध्ययन बढ़ाना होगा। अध्ययन करके नये-नये ज्ञान की पूँजी प्राप्त करनी होगी।

दिनांक २०-८-'६९
चाईबासा अनुमण्डल (सिंहभूम) के शिक्षा-पदाधिकारियों के बीच।

संघ के सभी सदस्यों की सेवा में :

संघ-अधिवेशन, राजगीर
दिनांक २३-२४ अक्तूबर, '६९

प्रिय बन्धु,

सर्व सेवा संघ का वार्षिक अधिवेशन सर्वोदय-सम्मेलन के ठीक पहले दिनांक २३-२४ अक्तूबर, '६९ को राजगीर (विहार) में आयोजित किया गया है।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपना अक्तूबर माह का कार्यक्रम कृपया इस प्रकार बनाय कि २२ की रात अथवा २३ की सुबह तक आप राजगीर पहुँच सकें, ताकि संघ-अधिवेशन ता० २३ की सुबह से प्रारम्भ हो सके।

अधिवेशन में विचारणीय विषयों की सूची तथा कार्यक्रम आदि की जानकारी आपको यथाशीघ्र भेजी जा सकेगी। आप जिन विषयों को अधिवेशन में रखना चाहते हैं, उनको अपने सुझाव एवं तत्सम्बन्धी नोट सहित यहाँ शीघ्र भिजवा दें ताकि वह विचारणीय सूची में शामिल कर परिपत्रित किया जा सके।

आपका
नरेन्द्र दुबे,
सहमंत्री

सर्व सेवा संघ
पो०—गोपुरी, वर्धा
(महाराष्ट्र)

इन्कलाबी इंसान : हो ची मिन्ह

www.vinoba.in

वियतनाम को एकीकृत, विग्रहहीन, अनाश्रित प्रजातंत्रात्मक एवं श्रीसम्पन्न बनाने का स्वप्न देखनेवाले, सिर्फ स्वप्न देखनेवाले ही नहीं उसे अपनी सूझबूझ और अदम्य साहस से साकार करने की दिशा में जीवन भर प्रयत्नशील रहनेवाले उत्तर वियतनाम के राष्ट्रपति **हो ची मिन्ह** बुधवार (३ सितम्बर) की प्रातः ९।।। बजे दिवंगत हो गये। सिर्फ दो दिन पहले ही उनके गम्भीर रूप से अस्वस्थ होने का समाचार सुनकर दुनिया के लोग सन्न रह गये थे। और जब उनकी मृत्यु का समाचार हमने भी रेडियो से सुना तो पहले यह विश्वास ही नहीं हुआ कि इस वीर क्रांतिकारी का अवसान सहसा हो सकता है। **हो** बराबर अपने साथियों से कहा करते थे कि 'मैं बीमारी से कभी मरूँगा नहीं और अमेरिकी सैनिकों को साहस नहीं होगा कि वे मेरे नजदीक आ सकें। अगर मेरी मौत होगी तो अपने ही किसी सैनिक द्वारा, जब वह शत्रुपक्ष से मिल जायगा।' इस पर, कहा जाता है कि, सभी सैनिक उनके प्रति और श्रद्धालु हो जाया करते थे और उनके जरा से संकेत पर अपनी कुरबानी में आगा-पीछा नहीं सोचते थे। अगर ऐसा न होता तो सालों से चल रही इस अखण्ड लड़ाई का मुकाबिला छोटा-सा वियतनाम कैसे कर सकता था! और यही कारण है कि आज हो के विरोधी भी उनकी 'समरनीति' की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते।

लौहपुरुष **हो ची मिन्ह** का जीवन 'लौहपुरुष' शब्द को सार्थक करनेवाला रहा है। वियतनाम का स्मरण आते ही सबसे पहले वहाँ की वीरता और उसके सेनापति का चित्र बरबस साकार हो उठता है। हम सब हिंसा के समर्थक कतई नहीं हैं, लेकिन जिस परिस्थित में **हो** को शस्त्र उठाने पड़े, उसके लिए हम उनको दोषी नहीं ठहरा सकते। चारों ओर से जब वियतनाम घिर गया और प्रबल शत्रु के अत्याधुनिक शस्त्रों के सामने अनुनय-विनय का, बातचीत का, कोई तरीका नहीं दिखा तो कुत्तों-बिल्लियों की भाँति मरने के बजाय **हो ची मिन्ह** ने अपने देशवासियों को ललकार दिया। उनकी ललकार ही प्रतिकार की दीवार बन गयी, जिसे आज तक अमेरिका की अपार सैन्य-शक्ति तोड़ नहीं सकी है और अब तो उनको शरमाकर अपनी सेनाओं की वापसी पर विचार करना पड़ेगा, यह ध्रुवसत्य है। वहाँ का सारा दृश्य इसलिए उभरता है, क्योंकि अनाक्रामक चरित्रवाले व्यक्ति बराबर यह देख रहे हैं कि वियतनामवासी सिर्फ इतनी-सी बात के लिए दोषी हैं कि उन्होंने अपने ढंग से अपने देश की व्यवस्था स्वावलम्बी बनाने की दशा में पहल की थी। सौजन्यता, वीरता और देशभक्त वहाँ के लोगों में कूट-कूटकर भरी है और उनका यह संकल्प है कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध अथक संघर्ष में वे अपने कदम पीछे नहीं हटायेंगे। यही उनके लिए शोभनीय भी होगा।

वियतनामवासियों पर जितने लम्बे समय तक, जितना क्रूर प्रहार अमेरिका ने किया है और जितनी निर्दयता से बेगुनाहों का खून बहाया गया है, उससे मानवता कराह उठी है। विश्वबन्धुत्व और मानवीय सम्बन्धों के प्रबल समर्थकों की शुरू से यही भूमिका भी रही है कि अत्याचार करनेवाले का प्रतिकार होना ही चाहिए। दुनिया के किसी भी हृदय व्यक्ति ने अमेरिका के जुल्मों का समर्थन नहीं किया है, अपितु **हो ची मिन्ह** के प्रतिकार के प्रति सहानुभूति ही प्रकट की है।

आजादी किसे प्रिय नहीं होती? जिसको अपनी और अपने देश की आजादी प्रिय नहीं, राष्ट्र की गौरवगरिमा के प्रति आस्था नहीं, वह इन्सान नहीं है। भारत के सद्ग्रन्थों में वर्णित इस भूमिका में खरे उतरनेवाले एक इन्सान **हो ची मिन्ह** थे। भारतीय भूमिका के अनुरूप गांधीजी ने आजादी का संघर्ष किया था। वैसे ही वियतनाम की परिस्थितियों के अनुरूप और अनुकूल संघर्ष का बिगुल बजाने के कारण वियतनामवासी उन्हें 'वियतनाम का गांधी' कहते थे।

१९ मई, १८९० को केन्द्रीय वियतनाम के किमलिन नामक गाँव में जन्मे **हो ची मिन्ह** का प्रारम्भिक नाम 'गुएन थाट थिन्ह' था। इनके पिता प्रशासनिक सेवा के तथा माता किसान परिवार की थीं। इन पर अपनी माताजी के संस्कारों ने अमिट छाप छोड़ी थी; इसीलिए इनमें विद्रोह के प्रति बचपन से ही लगाव था। फ्रांस-विरोधी कार्रवाइयों में इनके पिता को सरकारी नौकरी से पृथक् कर दिया गया था। **हो ची मिन्ह** पर इसका असर पड़े बिना न रह सका और वे बचपन में ही फ्रांस-विरोधी क्रांतिकारी मोरचे में शामिल हो गये थे। इसीलिए उच्च शिक्षा का अवसर उन्हें नहीं मिल सका।

डेनिस वार्नर ने लिखा है: अपने जीवन के प्रारम्भिक २८ वर्षों तक वे महत्त्वहीन व्यक्ति थे। शारीरिक दृष्टि से अक्षम, शिक्षा की दृष्टि से अयोग्य तथा लोकप्रिय होने की दृष्टि से सौन्दर्यहीन थे। ऐसे दृढ़निश्चयी के आकस्मिक निधन पर दुनिया के स्वातंत्र्यप्रिय लोगों ने अपनी-अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की हैं। हमारी निगाह में वे **'इन्कलाबी इन्सान'** के पूर्ण रूप थे। और ऐसे लोगों के बारे में तो यही कहना उचित होगा कि 'जिन्दगी उनकी है, जो मर के जिया करते हैं!' वास्तव में डाक्टर **हो ची मिन्ह** की मृत्यु तो तब सार्थक होगी जब वियतनाम स्वाधीन होगा और वहाँ के निवासी सम्मानपूर्ण जीवन जी सकेंगे।

राष्ट्रपति **हो** के बाद इस समय वियतनाम में जो रिक्तता आयी है वह अभी कम-से कम अकेले तो कोई पूरा करनेवाला दिखाई नहीं देता, किन्तु कई लोग मिलकर इस महापुरुष के अभाव की पूर्ति कर लेंगे। हर एक क्रांति के आरोहण की अवधि में ऐसे मुकाम आते हैं, जहाँ पर यह लगता दिखाई देता है कि अब क्रांति ठण्डी पड़ रही है, लेकिन उन्हीं में से कोई ऐसा निकल पड़ता है, जो झण्डा अपने हाथ में लेकर आगे चल पड़ता है। आशा की जाती है कि पूंजीवादी राज्य-व्यवस्था के खिलाफ अपने देशवासियों के दिलों में जो आग वे सुलगा गये हैं, वह आगे और धधकेगी तथा दबाव के आगे न झुककर अपनी परिस्थिति के अनुकूल प्रतिकार करने में वे विचलित नहीं होंगे, यही हो के प्रति श्रद्धा और निष्ठा की द्योतक होगी!

—कपिल अवस्थी

www.vinoba.in

अद्यतन औद्योगिक व्यवस्था और ग्रामस्वराज्य की औद्योगिक दिशा

अठारहवीं-उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में औद्योगीकरण ने सम्पूर्ण मानव-समाज में परिवर्तन ला दिया है। कहा जाता है कि औद्योगीकरण ने नयी तकनीक को जन्म दिया, जिसने नये किस्म की अर्थ-व्यवस्था विकसित की। इस कारण सामाजिक वर्गों का ढांचा एकदम बदल गया। प्राचीन शक्तिशाली वर्गों की शक्ति का ह्रास होने लगा और एक बिलकुल ही नये वर्ग की उत्पत्ति हुई, जिसकी शक्ति दिनोंदिन बढ़ने लगी। वह था पूंजीपति व्यवस्थापक वर्ग। इस वर्ग ने अपनी कल्पना-शक्ति, कठोर श्रम, खतरा उठाने की योग्यता और प्रबन्ध कौशल से चारों ओर उद्योगों का जाल-सा बिछा दिया, जिसके फलस्वरूप सामाजिक धन व पूंजी में काफी वृद्धि हुई। लाभ कमाना इस वर्ग का एकमात्र ध्येय रहा। यह वर्ग अपने कार्यों में स्वतंत्र, फिर भी बाजार, मांग व पूर्ति के नियमों के अधीन था। प्रोफेसर गैलब्रेथ ने हाल में ही अमेरिकी अर्थ तथा समाज व्यवस्था का अद्यतन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार पूंजीपति-व्यवस्थापक, जिसमें शेयर होल्डर्स भी शामिल हैं, पूंजीवादी व्यवस्था का मुख्य केन्द्र माना जाता है। मोटे तौर पर यह तो कहा ही जा सकता है कि आधुनिक औद्योगिकरण की व्यवस्था में लाभ एक व्यक्ति को न मिलकर, वह शेयर होल्डरों तथा व्यवस्थापक वर्ग में बंटता है। हाल के वर्गों में सामाजिक सेवा के नाम पर वह कुछ अंश में मजदूर वर्ग में भी बंटता है।

नयी तकनीक और व्यक्तिवाद

प्रो० गैलब्रेथ ने अद्यतन औद्योगिक व्यवस्था का जो रूप प्रस्तुत किया है, उससे सोचने की दिशा मिलती है; हालांकि भारत की आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी परिस्थिति में उनका अध्ययन कोई खास महत्त्व नहीं रखता है। उनका निष्कर्ष है कि "आयोजन के साथ यह नयी तकनीक व्यवस्थापक-पूंजीपति को, जिसकी प्रधानता तकनीक के परिणामस्वरूप ही बढ़ी थी, पीछे ढकेलने लगी है। आर्थिक क्षेत्र में उसकी निर्बाध स्वतंत्रता को सीमित करने लगी है। विकसित तकनीक, जो आधुनिक युग की विशेषता है, इतनी भारी व भयावह है कि इसने व्यक्ति के महत्त्व को नगण्य कर दिया है। व्यक्ति, जो औद्योगिक जनतंत्र का महत्त्वपूर्ण अंग है। नयी तकनीक का युग व्यक्ति का युग न रहा।"[1] इनकी राय में आज निगमों का महत्त्व काफी बढ़ चुका है। इस निगम पर 'टेकनोस्ट्रक्चर वर्ग' का अधिकार रहता है, जिसमें व्यवस्थापक वर्ग तकनीशियन, कर्मचारी होते हैं और इनके सहयोग में शिक्षक, वैज्ञानिक, स्कूल-कालेज, विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ता रहते हैं। यह बात केवल अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था पर नहीं लागू होती है। साम्यवादी अर्थ-व्यवस्था पर

अवध प्रसाद

आधारित सोवियत रूस के औद्योगिक प्रतिष्ठान कई बातों में अमेरिकी निगम से मिलते-जुलते हैं। परस्पर-विरोधी विचारधाराओं पर आधारित ये दोनों उद्योग-इकाइयां तकनालाजी के कारण बहुत समीप आ चुकी हैं। दोनों का राज्य से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है।

प्रो० गैलब्रेथ के उक्त अध्ययन से इतना तो अवश्य ही जाहिर होता है कि आज के युग में व्यक्ति के स्थान पर समूह का महत्त्व बढ़ गया है। सारी आर्थिक क्रियाएँ समूह द्वारा संचालित होती हैं। जो भी औद्योगिक या व्यापारिक निर्णय लिये जाते हैं, कदम उठाये जाते हैं, उनमें सामूहिक निर्णय ही प्रमुख होता है। यही कारण है कि पूंजीपति, जिसमें अनेक शेयर होल्डर्स होते हैं, उनका भी महत्त्व कम हो गया है। आज विशेषज्ञों का युग है और वास्तव में वही पूरी अर्थ-व्यवस्था का संचालन करते हैं। व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा पर आज कोई भी कार्य सम्भव नहीं रहा। समाजवाद और लोकतंत्र ने व्यक्ति के स्वार्थ को तेजी से कम किया है। आज यह सर्वमान्य विचारधारा बन रही है कि जो भी आर्थिक, सामाजिक कदम उठाये जायें, कार्य किये जायें, वे पूरे समाज के हित में हों। आर्थिक दृष्टि से पूंजीवाद में निहित व्यक्तिगत लाभ का विचार काफी पुराना पड़ गया है। यही कारण है कि दूसरे रूप में पूंजीवादी देशों में निगमों का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। और इसमें व्यक्तिगत लाभ का स्थान नगण्य हो गया है। इस क्षेत्र में पूंजीवादी निगम तथा साम्यवादी राज्य अर्थ-व्यवस्था में काफी अन्तर हो सकता है, परन्तु 'टोटल' दिशा सर्व का अधिक-से-अधिक कल्याण है, न कि व्यक्तिगत लाभ।

भारत की विशिष्ट परिस्थिति

भारत की परिस्थिति न तो साम्यवादी रूस की-सी है और नहीं पूंजीवादी अमेरिका की-सी। हम यहाँ एक बात यह कहना चाहेंगे कि तकनीक तथा उत्पादन-व्यवस्था में अपनायी जानेवाली नीति तथा पद्धति की दृष्टि से दोनों समान हैं। दोनों ने ही बड़े पैमाने की औद्योगिक तथा व्यापारिक नीति को स्वीकार किया है। आर्थिक तथा सामाजिक पूंजी की दृष्टि से भारत की परिस्थिति उनसे भिन्न है। पाश्चात्य देशों में जो आर्थिक तथा सामाजिक सुविधाएँ प्राप्त थीं, वे भारत को नहीं प्राप्त हैं। पश्चिमी देशों को जो तकनीकी सुविधा, पूंजी की पर्याप्तता, श्रम-शक्ति की कमी, खास ढंग की समाज-व्यवस्था, बाजार की सुविधा आदि प्राप्त हुई, वह हमें प्राप्त नहीं है। हमारी खास विशेषता है—शिक्षा का अभाव, तकनीक का बेहद पिछड़ा होना, पूंजी का नितान्त अभाव, बिखरा हुआ ग्रामीण समाज, श्रमशक्ति का आधिक्य आदि। ये कुछ ऐसे कारण हैं जिससे पाश्चात्य बड़े पैमाने के औद्योगीकरण का अन्धानुकरण भारत के लिए सम्भव नहीं। भारत में विकेन्द्रित अर्थ तथा समाज-रचना के पीछे जो तर्क दिये जाते हैं उसे हमें स्वीकार करना चाहिए। वैसे विकेन्द्रीकरण के नाम पर सरकारी तथा गैर-

* श्री सूरज शाह : 'निगमों के संसार में व्यक्ति' : 'खादी ग्रामोद्योग' पृष्ठ ११० अक्तूबर १९६८।

सरकारी ढंग के कुछ प्रयास किये गये हैं। परन्तु हमारा मानना है कि सम्पूर्ण विकेन्द्रित सामाजिक-आर्थिक जीवन-दर्शन को स्वीकार करके अबतक कोई भी ठोस प्रयास नहीं किया गया है। ग्रामदान-आन्दोलन उसे व्यावहारिक रूप देने का प्रयास कर रहा है। लेकिन आर्थिक दृष्टि से ग्रामदान का व्यावहारिक स्वरूप क्या होगा, इसका स्पष्ट खाका खींचना कठिन है। फिर भी सिद्धान्त के आधार पर व्यवहार का दिशा-दर्शन तो किया ही जा सकता है।

ग्रामस्वराज्य की अर्थरचना

आर्थिक क्षेत्र में सर्व के कल्याण की ओर बढ़ने के जो भी प्रयास अबतक किये गये हैं उससे स्पष्ट है कि अर्थ-व्यवस्था में व्यक्तिगत हित, व्यक्तिगत लाभ का तत्त्व काफी गौण हो चुका है। समाप्त हो चुका है, ऐसा हम नहीं कह सकते हैं; क्योंकि आज भी व्यक्तिगत अभिरुचि के आधार पर अधिक उत्पादन किया जा सकता है, यह मान्य विचार है। अद्यतन आर्थिक कार्यों में व्यक्ति का स्थान अत्यन्त गौण हो गया है; साथ-ही-साथ उत्पादन, विनिमय तथा वितरण के उद्देश्य में भी काफी परिवर्तन हो गया है। आज कोई भी व्यवस्था इस बात का प्रयास करती है कि अधिक-से-अधिक कल्याण हो। ग्रामदान सिद्धान्ततः तथा व्यवहारतः यह मानता है कि ऐसी अर्थ-व्यवस्था अपनायी जानी चाहिए, जिससे सर्व का कल्याण हो। इस दृष्टि से प्रयास होना चाहिए कि पूंजी, श्रम और बुद्धि को समान स्थान प्राप्त हो और उत्पादन में सबको समान हिस्सा मिले। साफ जाहिर है कि ग्रामदान में जो भी अर्थ-व्यवस्था अपनायी जायगी, उसमें शोषण को कोई स्थान नहीं होगा। यही कारण है स्वामित्व-विसर्जन इसकी प्रथम शर्त है। स्वामित्व की दृष्टि से ग्रामदान ट्रस्टीशप के सिद्धान्त को स्वीकार करता है। व्यक्ति संपत्ति का संरक्षक मात्र है, स्वामी नहीं। हम यहाँ यह भी मान लेते हैं कि भारतीय अर्थ-व्यवस्था विकेन्द्रित ढंग से चलनी चाहिए। इस कारण, ग्रामदान की मान्यता के अनुसार गाँव एक स्वतंत्र इकाई होगी और गाँव की सामूहिक शक्ति से आर्थिक विकास के कार्य किये जायँगे। पर जैसा कि दादा धर्माधिकारी ने कहा है कि, **"अलग कार्य का तात्पर्य यह नहीं कि एक गाँव का दूसरे गाँव के साथ कोई सम्बन्ध ही नहीं होगा"।** गांधीजी के शब्दों में **"ग्रामस्वराज्य की मेरी कल्पना यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा, जो अपने अहम जरूरतों के लिए पड़ोसी पर भी निर्भर नहीं होगा, और फिर भी बहुतेरी दूसरी जरूरतों के लिए, जिनमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा, वह परस्पर-सहयोग से काम लेगा।"[1] फिर इसकी रचना इस प्रकार की होगी—"उसका फैलाव एक के ऊपर एक के ढंग पर नहीं, बल्कि लहरों की तरह एक के बाद एक की शकल में होगा। वहाँ तो समुद्र की लहरों की तरह जिन्दगी एक के बाद एक घेरे की शकल में होगी और व्यक्ति उसका मध्यबिन्दु होगा।"[2]** ग्रामदान भी इसी शकल में अर्थ, समाज तथा राज्य-व्यवस्था स्थापित करना चहता है।

पश्चिम की नकल सम्भव नहीं

हमने देखा कि (१) भारत में आर्थिक-सामाजिक परिस्थिति खास ढंग की है। इसमें श्रमशक्ति का आधिक्य, प्रति व्यक्ति पूंजी की अत्यधिक कमी, अशिक्षा, अत्यधिक पिछड़ी तकनीक, प्राकृतिक साधनों की भी एक सीमा है। व्यापार तथा अन्य सुविधाएं भी कम हैं। (२) विश्व की अद्यतन औद्योगिक व्यापारिक दिशा व्यक्ति-विमुख तथा समुदाय की ओर अभिमुख है। यहाँ याद रखना चाहिए कि प्रो० गैलब्रेथ ने जिस 'टेक्नो-स्ट्रक्चर' की बात कही है, वह भारत में आनेवाले दशकों में सम्भव नहीं है। इस कारण यूरोपीय-पूंजीवादी या साम्यवादी ढंग की अर्थ-व्यवस्था, निगम-व्यवस्था या टेक्नोस्ट्रक्चर की व्यवस्था भारत में सम्भव नहीं। यदि इस ढंग के प्रयास किये गये तो इसके कुछ नमूने अवश्य बना सकेंगे। और वह नमूना विशाल समुद्र में छोटे-छोटे द्वीप के समान ही होंगे। इन द्वीपों के चारों ओर कूड़ा-करकट तथा गरीबी, बेकारी असन्तोष का समुद्र लहराता मिलेगा। इन कारणों से ग्रामदान को ऐसी अर्थ-व्यवस्था की तलाश करनी होगी, जो कि गाँव की सामूहिक शक्ति से चल सके। इसके लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति को काम की पूरी प्रेरणा भी मिले और सर्व का कल्याण भी हो।

औद्योगिक रचना से सम्बद्ध कुछ सुझाव

हम यहाँ व्यक्तिगत तथा ग्रामोद्योग पर थोड़ा विस्तार में विचार करना चाहेंगे। आज गाँव में पूंजी और तकनीक की जो स्थिति है उसे देखते हुए परम्परागत ग्रामोद्योग भी चलाना सम्भव नहीं। बाजार ने परम्परागत उद्योगों को समाप्त कर दिया है। फिर भी कृषि के साथ-साथ कोई-न-कोई उद्योग देना आवश्यक है। पूंजी की स्थिति को देखते हुए व्यक्तिगत तौर पर गाँव का सामान्य व्यक्ति किसी छोटे उद्योग को अपनाने में असमर्थ है। यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यूरोपीय देशों की भाँति यहाँ कोई संगठित औद्योगिक निगमों की स्थापना भी फिलहाल सम्भव नहीं है। इस कारण ग्राम-स्तर के व्यक्तिगत तथा सहकारी उद्योगों को पनपाने के लिए सामूहिक प्रयास ही उपयोगी होंगे। ये प्रयास ग्रामसभा के माध्यम से किये जा सकते हैं, चूंकि हमने स्वामित्व की दृष्टि से ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त को स्वीकार किया है, इस कारण व्यक्तिगत अभिरुचि से उद्योग चलाने, प्रोत्साहन देने में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए। प्रश्न है, ग्रामसभा किस प्रकार व्यक्तिगत या सामूहिक अभिरुचि से उद्योगों के विकास में सहयोग दे? ग्रामसभा इसे चाहे जैसा भी सहयोग दे, पर प्रारम्भिक तौर पर यह आवश्यक है कि ग्रामीण उद्योगों के लिए (१) उन्नत तकनीक, (२) अनुकूल बाजार की सुविधा उपलब्ध हो। इसके बाद ही ग्रामीण जनता को इस ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। अच्छी तकनीक तथा बाजार ग्रामसभा के क्षेत्र से बिलकुल बाहर हैं। इसके लिए ऊच्च स्तरीय निर्णय तथा प्रयास की आवश्यकता है। तकनीक की दृष्टि से खादी-ग्रामोद्योग कमीशन तथा अन्य संस्थाओं को व्यापक शोध तथा प्रचार करना चाहिए।

व्यवस्था की दृष्टि से ग्रामसभा कृषि-

१—गांधीजी : 'आर्थिक और औद्योगिक जीवन, पृष्ठ-२४, नवजीवन' प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।

२—वही, पृष्ठ २२।

उद्योग के विकास के लिए जिम्मेदार होगी और उसके सहयोग से ही गांव में व्यक्तिगत तथा सामूहिक उद्योग चलेंगे। इस दृष्टि से ग्रामसभा ये कार्य कर सकती है :

www.vinoba.in

१–गांवमें कौन उद्योग व्यक्तिगत आधारपर चलें और कौन सामूहिक, इसका निर्णय करना।

२–व्यक्तिगत आधार पर चलनेवाले उद्योगों को तकनीक, प्रशिक्षण, बाजार, कच्चा माल आदि की व्यवस्था में सहयोग। व्यक्तिगत उद्योगों के लिए अलग सहकारी समिति भी बन सकती है।

३–पूँजी जुटाने में ग्रामसभा स्वयं तथा बाहरी स्रोतों से सहयोग करे।

४–ऐसे उद्योग, जो कि व्यक्तिगत तौर पर नहीं चल सकते या जिसे ग्रामसभा व्यक्तिगत तौर पर नहीं चलाना चाहती हो, उसकी व्यवस्था करना। ऐसे उद्योग ग्रामसभा (क) स्वयं चला सकती है, (ख) सहकारी समिति के माध्यम से चलाने के लिए कुछ लोगों की सहकारी समिति बना सकती है, (ग) व्यक्तिगत तौर पर चलाने के लिए, निश्चित शर्तों के साथ किसी व्यक्ति को भी दे सकती है।

५–स्पष्ट है ग्रामदान में व्यक्तिगत स्वामित्व-विसर्जन के बाद भी फिलहाल आर्थिक असमानता रहेगी और ऐसे लोग रहेंगे, जिनके पास पर्याप्त पूंजी होगी। ऐसे लोगों में महाजन, बड़े किसान, नौकरी करनेवाले आदि होंगे। उद्योगों के विकास की दृष्टि से ग्रामसभा इनका पूरा सहयोग ले सकती है। इस दृष्टि से ग्रामसभा किसी खास या सभी उद्योगों के लिए : (क) शेयर इकट्ठा कर सकती है, और शेयर लेनेवालों को उचित लाभ की सुविधा भी दे सकती है। (ख) व्यवस्था के लिए एक समिति बना सकती है, जिसमें विशेषज्ञ हों।

६–ग्रामसभा मध्यम तकनीक की उपलब्धि सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओं के सहयोग से कर सकती है।

एकाएक व्यक्तिगत अभिरुचि के क्षेत्र को नहीं समाप्त कर सकते, इसलिए महाजन तथा बड़े किसानों की पूंजी, शिक्षित लोगों की बुद्धि तथा तकनीकी ज्ञान, और श्रमिकों का श्रम, तीनों का पूरा और सम्यक् उपयोग करना आवश्यक है।०

गांधी जन्म-शताब्दी सर्वोदय-साहित्य सेट

पुस्तक-परिचय

१. आत्मकथा (सन् १८६९ से १९१९)

स्वयं गांधीजी द्वारा लिखी हुई अपनी ५१ वर्ष की आत्मकथा।

२. बापू-कथा (सन् १९२०–१९४८)

आत्मकथा में सन् १९१९ तक की जीवनी है। इसके बाद सन् १९४८ तक की यानी अंतिम २९ वर्षों की यह जीवन-कथा विशेष रूप से इस अवसर पर तैयार करायी जा रही है। ये ही वे महत्त्वपूर्ण वर्ष हैं, जो गांधीजी ने भारत की आजादी के संघर्ष में बिताये और अन्त में शान्ति-सैनिक के नाते 'हे राम' कहकर चले गये।

३. तीसरी शक्ति (सन् १९४८–१९६९)

हिंसा की विरोधी और दण्ड-शक्ति से भिन्न तीसरी अहिंसक लोक-शक्ति के निर्माण की दिशा। विनोबाजी की इस पुस्तक में इसी लोक-शक्ति के अधिष्ठान का लोकनीतिमूलक चित्रण है। गांधीजी के जाने के बाद सन् १९४८ से सन् १९६९ तक के चिन्तन और प्रयोगों तथा जागतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान, शान्ति-सेना, खादी-ग्रामोद्योग आदि के रूप में विनोबाजी के विचारों का यह संकलन तीसरी शक्ति के रूप में प्रस्तुत है। इसमें पाठक देखेंगे कि गांधी-विचार का विकास कैसे-कैसे होता गया है। यह संकलन विनोबाजी के मार्गदर्शन में तैयार हुआ है।

४. गीता-बोध व मंगल-प्रभात

श्रीमद्भगवद्गीता का गांधीजी के जीवन में प्रेरक स्थान रहा है। सामान्य जनों के हितार्थ गांधीजी ने गीता के भावार्थ को सरल भाषा में रख दिया है। मंगल-प्रभात में एकादश व्रतों पर गांधीजी के विचारों का सारपूर्ण विवेचन है।

५. मेरे सपनों का भारत (संक्षिप्त)

गांधीजी चाहते थे कि इस देश में गरीबी और अज्ञान मिटे, सत्य और अहिंसा की शक्ति बढ़े, सब जन एक समान हों। उनका स्वप्न क्या था और हम उस स्वप्न को साकार करने में कितना योग दे सकते हैं, यह इस पुस्तक में बापू के शब्दों में पढ़िए।

६. गीता-प्रवचन

भगवद्गीता के १८ अध्यायों पर विनोबाजी के सारगर्भित और भावभीने प्रवचन। भारत की सभी भाषाओं में तथा यूरोप की कुछ भाषाओं में इस ग्रन्थ का अनुवाद हुआ है।

७. त्रिविध कार्यक्रम-साहित्य

त्रिविध कार्यक्रम-साहित्य, अर्थात् भूदान-ग्रामदान, शान्ति-सेना, खादी-ग्रामोद्योग आदि विषयों से सम्बन्धित पुस्तक।

सेट नं० २, पृष्ठ १५००, रु० ७)

ऊपर की सातों पुस्तकों का यह १५०० पृष्ठों का साहित्य-सेट केवल ७ रु० में प्राप्त होगा। एकसाथ २८ या अधिक सेट लेने पर रु० ६·५० में मिलेगा।

सेट नं० १, पृष्ठ १०००, रु० ५)

ऊपर की प्रथम पांच पुस्तकों का १००० पृष्ठों का साहित्य-सेट केवल ५ रुपये में प्राप्त होगा। एकसाथ ४० या अधिक सेट लेने पर रु० ४·५० में मिलेगा।

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–१

स्व० रावसाहब : भव्य व्यक्तित्व, कृतार्थ जीवन

www.vinoba.in

दो प्रकार की लोकप्रियता होती है—दूर की और समीप की। बहुत थोड़े व्यक्तियों में ही दोनों प्रकार की लोकप्रियता पायी जाती है। कुछ व्यक्ति दूर-दूर तक प्रसिद्ध होते हैं। वक्तृत्व, कर्तृत्व, नेतृत्व इन समान गुणों के कारण दूर-दूर के लोगों में उनका परिचय होता है। परन्तु व्यक्तित्व की सच्ची परख इन गुणों से ही नहीं होती है। बहुत समीप रहनेवालों को कभी-कभी इन गुणों का परिचय भी नहीं होता है। समीप के लोगों को प्रिय लगनेवाले व्यक्ति मुख्य रूप से हृदय के गुणों पर पोषित होते हैं। अन्य लोगों के हित में ही अपना हित मानना, स्वयं का सम्पूर्ण आनन्द अन्य लोगों के सुख में मिला देना, ऐसे व्यक्तियों का यह सहज स्वभाव होता है। सम्पर्क में आनेवाले लोगों के साथ ऐसे व्यक्तियों की एक तरह से लगभग अभिन्नता-सी होती है।

दोनों प्रकार की लोकप्रियता जिन थोड़े-से लोगों को प्राप्त होती है, उनमें से एक **'रावसाहब'** पटवर्धन भी थे। जो भी उनके सम्पर्क में आता था उसे उनके व्यक्तित्व का मृदु स्पर्श मिलता था। जैसे क्षितिज जो कहीं से देखने पर भी समीप ही जान पड़ता है, वैसे ही **रावसाहब** भी सबके समीप थे। हरेक को ऐसा लगता था कि **रावसाहब'** अपने ही हैं, और **रावसाहब** को भी सभी अपने ही मालूम पड़ते थे। तभी तो उनका परिवार हमेशा भरापूरा दिखता था! नगर-जिले की सामान्य व्यायामशालाएँ, पूना के विद्यालयों के विद्यार्थी, राजकीय पक्षों के कार्यकर्ता, नेता, साहित्यिक, पत्रकार, मजदूर, कारखाने के मालिक, सभी उनके यहाँ आते-जाते थे। सभी लोगों का स्वागत-सत्कार **रावसाहब** समान रूप से बड़े प्रेम के साथ करते थे। 'बहुत दिनों बाद दिखाई पड़े, स्वास्थ्य कैसा है? स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखें।'—ये वाक्य तो तीन ही होते थे, लेकिन इनके माध्यम से वे सामनेवाले व्यक्ति के हृदय तक पहुँचने का प्रयत्न करते थे। मिलने आये हुए व्यक्ति को ज्ञान तो प्राप्त होता ही था, जिसका उनके यहाँ अतुल भंडार था; लेकिन दूसरों के साथ आन्तरिकता स्थापित कर लेना उनकी विशेषता थी। विविध प्रकार के लोग उनके समीप आये उसका यही कारण था। निकट के लोगों में उनके लिए जो स्नेह था, वह भी इसीलिए।

व्यक्ति-सम्पर्क की उनकी चाह हर क्षण कायम रहती थी, अगर कोई मिला नहीं, तो वे कुछ बेचैन हो जाते थे, और बस निकल पड़ते थे लोगों के पास मिलने के लिए। हमेशा वे मोटर से ही नहीं चलते थे। अस्वस्थता के कारण आजकल पैदल चलना और श्रम करना उनके लिए अनुकूल नहीं था फिर भी वे अक्सर पैदल ही निकल पड़ते थे। अनेक बार तो वे साइकिल से ही मीलों अपने किसी मित्र से मिलने चले जाते थे, किसी काम से नहीं, सिर्फ मिलने की इच्छा से ही। और कोई प्रिय व्यक्ति मिला तो दूर से केवल हाथ जोड़कर नमस्कार करने में ही **रावसाहब** को सन्तोष नहीं होता था जब तक कि वे स्वयं जाकर उसे गले से नहीं लगाते थे। **रावसाहब** स्वच्छताप्रिय व्यक्ति थे, परन्तु ऐसे अवसरों पर सामनेवाले व्यक्ति के कपड़े साफ हैं कि नहीं, उन्हें इसका कोई ध्यान नहीं रहता था। इसमें उनकी हार्दिकता प्रकट होती थी। उनके बड़प्पन का रहस्य इसमें निहित है।

राजनीतिक प्रकृति के वे थे ही नहीं। वे थे स्वातंत्र्य-प्रकृति के। स्वतंत्रता उनके लिए एक जीवन-मूल्य थी। और इसी दृष्टि से वे स्वतंत्रता के आन्दोलन में शामिल हुए थे, राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त हुई, इस स्वतंत्रता का सुख दलित, पीड़ित लोगों को भी प्राप्त हो सके, इस सन्दर्भ में राष्ट्र के विकास की योजना बनेगी और राष्ट्रभर में स्वतंत्रता की हवा जोरों के साथ बहने लगेगी ऐसी उन्हें आशा थी। स्वतंत्रता-आन्दोलन के समय के त्याग की थकावट आयी और अब स्वतंत्र भारत में त्याग की आवश्यकता नहीं, इस विचार ने कभी उनके मन को स्पर्श नहीं किया।

आज की राजनीति उन्हें कैसी दिखाई देती थी, इसका विवेचन उन्होंने बहुत ही सुन्दर और स्पष्ट शब्दों किया है: **"भारत की राजनीति में पहले जैसा ध्येयवाद नहीं रहा, सेवा और त्याग के मूल्य की कदर नहीं रही, बलवान गुटों की आपसी स्पर्धा, उधमबाजी, यही राजनीति बन गयी है।"**

रावसाहब

उनकी दृष्टि में इसका परिणाम: **"अधिकारारूढ़ मंत्रिमंडल में एकता का अभाव दिखाई पड़ने लगा है। किसी भी प्रकार अधिकार जमाये रखना यही राजनीतिक कुशलता का अर्थ रूढ़ हुआ, ऐसा नजर आता है।"**

रावसाहब को यह सब अच्छा नहीं लगा—'मुझे नेता कहिए, मुझे नेता मानिए, मैं आपकी जाति का, धर्म का, भाषा का, वर्ग का हूँ, यह भूमिका उनके जैसे ध्येयनिष्ठ व्यक्ति को कभी भी जँची नहीं। राजनीति यानी खींचातानी, स्वार्थ; राजनीति यानी व्यक्ति से भी अधिक 'संगठित सत्ता' श्रेष्ठ होती है; यह सूत्र स्वतंत्रताप्रिय **रावसाहब** कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते थे। स्पर्धा से दूर, किन्तु त्याग से समीप, यही उनका सूत्र था। उनकी मानवतावादी भूमिका से यही मेल खानेवाला था। उनके लिए राष्ट्रीय स्वतंत्रता सम्पूर्ण मानव जाति की अबाधित स्वतंत्रता का शुभारम्भ थी। राष्ट्रीय स्वतंत्रता के बाद लोगों को खुद ही कदम बढ़ाने चाहिए। उदात्त ध्येय से प्रेरित होकर लोग इसके लिए संगठन और आन्दोलन करें, ऐसी उनकी इच्छा थी। जहाँ उदात्तता, भव्यता हो वहाँ **रावसाहब** न हों, ऐसा कभी नहीं होगा। लोगों को जहाँ दुख है, वहाँ उन्हें निमंत्रण की आवश्यकता नहीं थी। इसीलिए भूदान-आन्दोलन की बुनियाद में होनेवाली उदात्त प्रेरणा की उन्होंने कदर की। यह समता का, समविभाजन का, त्याग का और लोगों के पुरुषार्थ का आन्दोलन है, इस बारे में उन्हें किंचित् भी शंका नहीं थी। **"मैं सर्वोदय का सहप्रवासी हूँ, ऐसा कहते-कहते वे सर्वोदय के कार्य में पूर्णतः एकरूप हो गये थे।** छोटा-

सा शिविर हो, या अखिल भारतीय सम्मेलन हो, विनोबाजी की पदयात्रा हो, इन सभी में **रावसाहब अवश्य भाग लेते थे। अंग्रेजी 'भूदान' साप्ताहिक के संपादक की जिम्मेदारी को उन्होंने कर्मठता एवं कुशलतापूर्वक निभाया।**

www.vinoba.in

संकुचित विचारों से **रावसाहब** बहुत दुखित होते थे। भाषा के आधार पर प्रान्तों की पुनर्रचना को लेकर फैले हुए आन्दोलन से उनके मन को अधिक ठेस पहुँची थी। वे कई बार कहते—**"हम सब स्वतंत्रता एवं लोकशाही के लायक ही नहीं! कैसे हैं ये पक्ष, और कैसे हैं ये आन्दोलन!"**—ऐसा कहते हुए उनके हृदय में दुख की बाढ़ उमड़ पड़ी है, ऐसा सुननेवालों को लगता था। असम में बंगला-भाषा के विरुद्ध उत्पात हुआ, अनेक परिवार निराधार हो गये। उनकी सांत्वना के लिए **रावसाहब** वहां दौड़ पड़े। वापस लौटने पर असम के बंगाली बन्धुओं की सहायता के लिए एक निधि जमा करने के काम में पहल की। पानशेत बाँध के टूटने पर नागरिकों की जो हानि हुई, उस समय पूना में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने सेवा-कार्य किया। उस समय **रावसाहब** नित्यप्रति सेवा में हर कठिन-से-कठिन कार्य में कार्यकर्ताओं के साथ लगे रहे। तब दस दिन के शिविर का आयोजन किया, जिसमें करीब १०० कार्यकर्ता थे। इन सभी कार्यकर्ताओं को **रावसाहब** का विशेष रूप से सहारा था। अभी हाल ही में कोयनानगर के भूचाल के समय प्रारम्भिक सेवा-कार्य में **रावसाहब** ने सर्वोदय-सेवकों की सभी प्रकार से काफी मदद की थी। एक जीप के लिए कितने ही लोगों के पास गये थे। **रावसाहब** को माँगना अच्छा नहीं लगता था, परन्तु दुखियों के लिए माँगने में कभी भी उन्होंने संकोच नहीं किया। अणुशस्त्र से लोगों को खतरा है इसकी भयंकरता का अनुमान करके अणुशस्त्र-विरोधी सम्मेलन में उन्होंने विशेष रूप से सहयोग दिया। पूना की जनता को अणुशस्त्र के बारे में समझाने के लिए अनेक सभाओं में भाषण करने का सर्वाधिक प्रयत्न आपने किया था। सामाजिक जीवन में महत्त्व के कौनसे कार्य करने हैं, इसके बारे में उनका एक दृष्टिकोण था। सत्ता व स्पर्धा की राजनीति सांस्कृतिक, शैक्षिक क्षेत्र में घुसने लगे तो सामाजिक जीवन छिन्न-भिन्न हो जायगा, इसका उन्हें स्पष्ट आभास था। सत्ता की राजनीति में स्पर्धा होगी' ही यह उन्हें मालूम था, परन्तु एक मर्यादा के बाहर यह स्पर्धा गयी तो लोकशाही को और राष्ट्रीय प्रगति को बहुत बड़ा धक्का लगेगा, ऐसा उन्हें डर था। लोकशाही की नौका लोकमत की जलधारा में तैरती है। अपने इस लोकशाही में लोकमत वास्तविक दृष्टि से निर्माण ही नहीं हुआ। इसके बारे में उनका कहना था, "चेतन, जागृत और संगठित लोकमत का राष्ट्रीय नेताओं के पीछे आधार न होने के कारण राज्यकर्ता लोग सावधान नहीं रह सके।" और फिर—**"साम्प्रदायिकता, धार्मिक कर्मकाण्ड अर्थशून्य होते हैं, अर्थात् उससे चित्त-शुद्धि नहीं होगी। वही स्थिति राजनीतिक पक्षों की भी हुई है। चाहे वह दक्षिण पंथ हो अथवा वाम पंथ, सब जगह औपचारिक और सतही बकझक! लोकमानस पर लोकतांत्रिक संस्कार डालने की राजकीय नेताओं में कूवत ही नहीं रही।"**

फिर यह काम कौन करे? इसका उत्तर **रावसाहब** ने गत बीस वर्षों के अपने जीवन से दिया है। राजनीतिज्ञ, दल अथवा संस्थाएँ यह कभी भी नहीं कर सकती थीं। लोकमत-निर्माण के प्रत्येक कार्य में **रावसाहब** ने सजग होकर भाग लिया, क्योंकि वे राजनीतिक स्थिति के प्रति जागरूक थे। विधान-सभा में होनेवाले उपद्रवों से **रावसाहब** को जो कष्ट होता था, उसका वर्णन करना कठिन है। ये उपद्रव क्यों होते हैं? इसका कौन जिम्मेदार है? लोग भी क्यों नहीं कुछ बोलते? जागृत व प्रभाव लोकमत अस्तित्व में होता तो लोगों के वोट से चुनकर आये हुए प्रतिनिधियों को लोकशाही के इन मंदिरों में अभद्रता बरतने तथा उसे अपवित्र करने का साहस नहीं होता। अर्थात् वास्तविक लोकमत तैयार करने का काम तो होना ही चाहिए। उसे करनेवाले को सत्ता व स्पर्धा से अलिप्त रहना चाहिए। परन्तु हमेशा कार्यरत रहना चाहिए। लोगों को, दूर से देखनेवालों को **रावसाहब** निवृत्त हुए ऐसा लगता होगा। स्वयं भी वे यही कहते थे। परन्तु कहीं भी इस तरह के काम सामने आने पर **रावसाहब** अग्रणी रूप में अवश्य शामिल होते थे, इसका क्या कारण है? वास्तविक कारण यही है कि राजनीति से भी अधिक उन्होंने लोकशिक्षण को महत्त्वपूर्ण माना था।

सत्याग्रही समाज, समता, समृद्धि, मानवता, ये सब उच्चतम लक्ष्य **रावसाहब** के जीवन में थे।

सभी दीन-दुर्बल व्यक्तियों के प्रति करुणा, आपद्ग्रस्तों के प्रति हार्दिक सहानुभूति **रावसाहब** के अन्दर भरपूर थी। तभी तो वे क्या असम और क्या सह्याद्रि की घाटियों में, सब जगह एक-सी आत्मीयता के साथ वे घूमे। वास्तव में वे एक विश्व-नागरिक थे।

जीवन में कटु, अप्रिय प्रसंगों में मनुष्य कैसा व्यवहार करता है, इससे उसके व्यक्तित्व की गहराई का अन्दाज लगाया जा सकता है। दुःख में उद्वेग न हो, यह उसकी पहचान है। शांत, गम्भीर, धीर-उदात्त व्यक्तित्व, आनन्दमयी मुद्रा, मुक्त हँसी, विनम्र विनोद, फूलों का शौक, और बालकों से अगाध स्नेह, ये सभी **रावसाहब** के व्यक्तित्व की गहराई व्यापकता को दर्शाते हैं।

ऐसा समृद्ध व्यक्तित्व आज चिरनिद्रा में विलीन हो चुका है। वे यह कहते हुए गये, **'जीवन का प्याला भर चुका है, लबालब भर चुका है, अतः अब जाना ही चाहिए'**, और वे चले गये! अनेक को दुःख में छोड़कर चले गये! श्रीमती माणिकबाई उनकी सुविद्य, गम्भीर, शांत, मधुरभाषी पत्नी हैं, इनके ऊपर तो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा है! उनका खुद का भी व्यक्तित्व **रावसाहब** के अनुरूप बराबरी का ही है। यह दुःख वे धर्यपूर्वक सहन करेंगी, हम सब उनके दुःख में सहभागी हैं!

रावसाहब के पाँच भाई—**श्री अच्युतराव, जबुभाऊ, बालासाहब, पमासाहब, माधवराव,** सभी लोगों को अपार दुःख है। उन्हें हम सब किन शब्दों में सांत्वना दें?

रावसाहब ने पूना में हम सब लोगों के बीच अपार प्रेम की वर्षा की। अब तो उनकी याद ही हम लोगों की थाती है! **रावसाहब की पवित्र स्मृति को हमारे सहस्र प्रणाम!**

(मूल मराठी से) **—गोविन्दराव देशपांडे**

अहमदाबाद में सर्वोदय-पात्र

www.vinoba.in

यों तो सर्वोदय-पात्र देश के कोने-कोने में रखे जाते हैं और उनसे होनेवाली आय का विनियोग भी सर्वोदय-आन्दोलन के लिए होता है, किन्तु अहमदाबाद जैसे महानगर में सर्वोदय-पात्र अभियान की अपनी एक कहानी है।

अभी पिछले दिनों सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री एस० जगन्नाथन् अहमदाबाद के गांधी-आश्रम में रचनात्मक कार्यकर्ताओं से मुलाकात के लिए आये थे। उनसे मिलकर जब हम नगरीय कार्यालय वापस आ रहे थे तो रास्ते में श्री शिवाकाका मुझसे कहने लगे—"सर्वोदय-पात्र के कार्य से मुझे हर एक घर की सीढ़ियाँ चढ़नी-उतरनी पड़ती हैं। इससे थकान खूब आती है और भूख बड़ी अच्छी लगती है, और शाम को सब पैसों का हिसाब करता हूँ तो दिमागी कसरत हो जाती है, जिससे नींद भी बढ़िया आती है।" श्री शिवाकाका इस समय साठ वर्ष के हैं। इनको मैं पिछले आठ सालों से देख रहा हूँ। इनको सिर्फ एक ही धुन है—नगरों में सर्वोदय-पात्र को अधिक-से-अधिक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित करना। दिनभर अपने काम में मशगूल रहते हैं और जब मौका मिलता है तो अपना भोजन खुद तैयार कर लेते हैं। आजकल एक हजार सर्वोदय-पात्रों की देखभाल कर रहे हैं। कौन जानता था कि मेहसाणा जिले के एक देहात में जन्मे शिवाकाका सिर्फ उस गाँव के ही नहीं, अपितु सारे गुजरात के छोटे-छोटे बच्चों के प्रिय बन जायेंगे?

एक ओर भाई कृष्णवदन शाह हैं, जो एम० ए० करके श्री रविशंकर महाराज की ओर आकृष्ट हुए और अहमदाबाद में सर्वोदय के काम में जुट गये। विचार-प्रचार और सर्वोदय-पात्र के काम इनको प्रिय है। अभी पिछले दिनों जिला-संयोजक भी इन्हींको बनाया गया है। एक बार इनको सूझा कि क्यों न 'गीता-प्रवचन' ग्रंथ को व्यापक किया जाय। फलतः 'गीता-प्रवचन' की दस हजार प्रतियाँ घूम-घूमकर बेचीं। एक हजार सर्वोदय-पात्र चलाने का जिम्मा भी इन्होंने उठाया है और सफलतापूर्वक चल भी रहे हैं। इन्होंने सर्वोदय-पात्र के बारे में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—'सर्वोदय-पात्र से अहमदाबाद शहर में हम खड़े हैं और जीवन का संतोष मुझे मिल रहा है।'

श्री जुगतराम भाई का सूरत जिला है। उस जिले की ग्रामीण संस्थाओं में हजारों की संख्या में सर्वोदय-पात्र हैं। शान्ति-सेना के शिविर वगैरह अच्छे कार्यक्रम यहाँ चलते हैं जिनको श्री जुगतराम भाई का मार्गदर्शन मिलता है।

बड़ौदा शहर में श्री रत्नसिंह ७६ वर्ष की आयु में भी हर मुहल्ले से सर्वोदय-पात्र की वसूली के लिए चार-चार, पाँच-पाँच मंजिलों-वाली इमारतों की सीढ़ियों पर धड़ल्ले से चढ़ते-उतरते रहते हैं। और, महेसाणा में श्री गोपाल भाई पटेल बरसों से सर्वोदय-पात्र चलाते आ रहे हैं।

श्री नन्दलाल ठक्कर भले ही ६५ वर्ष के हो गये हैं, लेकिन उनकी मस्ती और स्फूर्ति देखकर उन्हें कोई वृद्ध कह नहीं सकता! गाँवों में सर्वोदय-पात्र चलाने का काम इन्होंने स्वयं ले लिया है।

याद आती है वह घड़ी जब श्री रविशंकर महाराज ने सिर्फ अहमदाबाद नगर में ४५ हजार सर्वोदय-पात्र रखाये थे। कुछ दिन तक सर्वोदय-पात्रवाले परिवारों से इनका जीवन्त सम्पर्क भी रहा। बाद में कोई ऐसा व्यक्तित्व आगे नहीं आया, जो इन पात्रों की सातत्यता कायम रख सके।

मेरा अपना विश्वास है कि गुजरात प्रदेश के सर्वोदय-पात्रों की आय से देश में सर्वोदय-आन्दोलन को काफी सहायता मिलती रह सकती है। काश, ये सर्वोदय-पात्र बन्द न होते!

—काकुभाई दोशी

स्वास्थ्योपयोगी प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें

पुस्तक	संस्करण	लेखक	मूल्य
कुदरती उपचार		महात्मा गांधी	०-८०
आरोग्य की कुंजी		,, ,,	०-४४
रामनाम		,, ,,	०-५०
स्वस्थ रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है	द्वितीय संस्करण	धर्मचन्द सरावगी	२-००
सरल योगासन	,, ,,	,, ,, (प्लास्टिक कवर)	३-००
यह कलकत्ता है	,, ,,	,, ,,	१-००
तन्दुरुस्त रहने के उपाय	प्रथम संस्करण	,, ,,	१-२५
स्वस्थ रहना सीखें	,, ,,	,, ,,	१-००
घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,,	,, ,,	०-७५
पचास साल बाद	,, ,,	,, ,,	१-००
उपवास से जीवन-रक्षा		अनुवादक ,, ,,	३-००
रोग से रोग-निवारण		स्वामी शिवानन्द	१०-००
Miracles of fruits		G. S. Verma	5.00
Everybody guide to Naturecure		Benjamin	24-30
Diet and Salad		N. W. Walker	15-00
उपवास		शरण प्रसाद	१-२५
प्राकृतिक चिकित्सा-विधि		,, ,,	२-५०
पाचनतंत्र के रोगों की चिकित्सा		,, ,,	२-००
आहार और पोषण		झवेरभाई पटेल	१-५०
वनौषधि शतक		रामनाथ वैद्य	२-५०

इन पुस्तकों के अतिरिक्त देशी-विदेशी लेखकों की भी अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए।

एक्मे, ८।१, एसप्लानेड ईस्ट, कलकत्ता-१

www.vinoba.in

विवेकरहित विरोध
बनाम
बुनियादी परिवर्तन-प्रक्रिया

"शासन के खिलाफ विवेकरहित विरोध चलाया जाय तो उससे अराजकता की, अनियंत्रित स्वच्छंदता की स्थिति पैदा होगी और समाज अपने हाथों अपना नाश कर डालेगा।"

—गांधीजी

आज देश में आये दिन घेराव, धरना, लूटपाट, आगजनी, कथित सत्याग्रह की कार्रवाइयाँ लोकतंत्र में सामूहिक विरोध के हक के नाम पर होती हैं।

सर्वोदय-आन्दोलन भी वर्तमान समाज, अर्थ और शासन-व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह है। किन्तु, वह इसका एक नियंत्रित, रचनात्मक एवं अहिंसक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

इसके लिए पढ़िए, मनन कीजिए :—

(१) हिन्द स्वराज्य —गांधीजी

(२) ग्रामदान —विनोबाजी

फिर एक जिम्मेवार नागरिक के नाते समाज परिवर्तन की इस क्रान्तिकारी प्रक्रिया में योग भी दीजिए।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति)
दुकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैंरू, जयपुर-३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

आन्दोलन के समाचार

राजगीर सर्वोदय सम्मेलन के लिए रेलवे-रियायत

यह सूचना देते हुए प्रसन्नता है कि रेलवे बोर्ड की ओर से सम्मेलन में जाने के लिए एक तरफ का किराया देकर "वापसी टिकट" की सुविधा प्राप्त हो चुकी है। कन्सेशन सर्टिफिकेट्स छप गये हैं और जल्द-से-जल्द यहाँ से डिस्पैच हो जायेंगे। इस सम्बन्ध में निम्न बातों की ओर कृपया ध्यान देने का कष्ट करें :—

• वापसी टिकट की यह सुविधा १६० किलोमीटर से अधिक की यात्रा के लिए ही प्राप्त हो सकेगी। प्रति व्यक्ति के हिसाब से (पूरा नाम व पता देकर) ५ रुपये प्रतिनिधि-शुल्क प्राप्त होने पर कन्सेशन सर्टिफिकेट भेजे जायेंगे। सम्मेलन की कार्रवाई में भाग लेने के इच्छुक भाई-बहन १० अक्तूबर, '६९ तक सम्मेलन मंत्री, १८वाँ सर्वोदय समाज सम्मेलन, गोपुरी, वर्धा के पते पर पाँच रुपये मात्र प्रतिनिधि-शुल्क भेजकर प्रतिनिधि बन सकते हैं।

• ये सर्टिफिकेट्स सर्व सेवा संघ के वाराणसी तथा गोपुरी कार्यालय के अलावा सभी प्रादेशिक सर्वोदय मण्डलों, कुछ जिला सर्वोदय मण्डलों और कुछ चुनी हुई रचनात्मक संस्थाओं और प्रदेश की बड़ी खादी-संस्थाओं से प्राप्त हो सकें, यह व्यवस्था भी की जा रही है।

• राजगीर पहुँचने पर भोजन-शुल्क जमा करके भोजन-टिकट लिये जा सकेंगे।•

कानपुर जनपद में ग्रामदान-अभियान

कानपुर जनपद के मैथा प्रखण्ड में गत २८, २९ अगस्त को ग्रामदान-अभियान शिविर हुआ, जिसमें १०० कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करके चार दिनों तक पूरे प्रखण्ड में अभियान चलाया गया। प्रखण्ड के कुल २५७ गाँवों में १४७ गाँवों का ग्रामदान सम्पन्न हुआ।

—रामजीवन

भारत में ग्रामदान-प्रखण्डदान-जिलादान

(३०-८-'६९ तक)

प्रांत	ग्रामदान	प्रखण्डदान	जिलादान
बिहार	४९,७१२	५३०	१४
उत्तरप्रदेश	२०,०००	१०४	३
तमिलनाडु	१२,३८५	१३९	४
उड़ीसा	११,७३८	५९	१
मध्यप्रदेश	५,४०८	२५	२
आंध्रप्रदेश	४,११९	१२	
संयुक्तपंजाब	३,६९४	७	
महाराष्ट्र	३,६४६	१५	
असम	१,५७०	१	
राजस्थान	१,२७०	१	
गुजरात	१,०१७	३	
प० बंगाल	७४८		
कर्नाटक	६९२		
केरल	४१८		
दिल्ली	७४		
जम्मू-कश्मीर	१		
कुल :	१,१६,४९२	८९६	२४

जिला	ग्रामदान	प्रखंडदान	जिलादान
दरभंगा	३,७२०	४४	१
मुजफ्फरपुर	३,९१७	४०	१
पूर्णिया	८,१५७	३८	१
सारण	३,७७१	४०	१
चम्पारण	२,८९०	३६	१
गया	५,८४५	४६	१
मुंगेर	३,०४४	३७	१
सहरसा	२,७५१	२३	१
धनवाद	१,२८४	१०	१
पटना	२,०४८	२८	१
पलामू	८०४	२५	१
हजारीवाग	५,९३९	४२	१
भागलपुर	२,८७०	२१	१
सिंहभूम	१,२६३	२१	—
संतालपरगना	१,१९४	२७	—
शाहाबाद	१७१	४१	१
राँची	४४	११	—
कुल :	४९,७१२	५३०	१४

कुछ आवश्यक सूचनाएँ

• सफेद कागज अत्यधिक महँगा हो जाने के कारण 'भूदान यज्ञ' अब अखबारी कागज पर छपने लगा है। अभी जो कागज हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह बहुत ही साधारण किस्म का, लेकिन भारत के राष्ट्रीय उद्योग का उत्पादन है। लेकिन हम अगले दो महीने में ही इससे अधिक अच्छे किस्म के अखबारी कागज दे सकने की स्थिति में आ जायेंगे।

• जिन लोगों को 'भूदान-यज्ञ' की फाइल रखनी होती है, उनके लिए हम १२ रुपये वार्षिक शुल्क प्राप्त होने पर सफेद कागज पर छपे 'भूदान-यज्ञ' की व्यवस्था कर सकते हैं।

• पाठकों, कार्यकर्ताओं, शुभ-चिन्तक मित्रों की ओर से बराबर यह माँग आती रही है कि 'भूदान-यज्ञ' का नाम बदला जाय। आप सबको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि राजकोट में सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति ने 'भूदान-यज्ञ' का नाम बदलकर 'सर्वोदय' रखना निश्चित कर लिया है। इस नये नाम के आधार पर रजिस्ट्रेशन की कार्यवाही चल रही है।

• अपने पास प्रेस न होने के कारण हमें बाहर के प्रेस पर निर्भर रहना होता है, जिसके कारण कभी-कभी अंक प्रकाशित होने में एकाध दिन की देर हो जाया करती है। हम इसके लिए क्षमा चाहते हुए निरन्तर समय से पत्रिका प्रकाशित करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

• किसी प्रकार के पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें, जो आपके पतेवाले रैपर पर छपा होता है।

—व्यवस्थापक

विनोबाजी शतायु हों

—राँची में विनोबा-जयन्ती के अवसर पर विनोबाजी को शतायु होने की कामना—इस अवसर पर दतिया (म० प्र०) का जिलादान तथा राँची का सदर अनुमण्डलदान विनोबाजी को समर्पित—

राँची से हमारे विशेष सम्वाददाता ने सूचित किया है कि विनोबाजी की जयन्ती उन्हीं की उपस्थिति में मनायी गयी। दुनिया के लगभग सभी धर्मों की सद्वनों का पाठ किया गया और भारत की सभी भाषाओं में भजनों का गायन हुआ। बिहार के वयोवृद्ध नेता श्री गौरीशंकर शरण सिंह ने राँची की तरफ से तथा पूरे बिहार की तरफ से बाबा के शतायु होने की कामना की।

इस समारोह में भारत के करीब प्रत्येक प्रदेश के लोग तथा भारत के बाहर के भी कुछ लोग उपस्थित थे। बाबा ने समारोह में उपस्थित बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री-पुरुष, सबके लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि यहाँ एक छोटा-सा विश्व-रूप का ही दर्शन होता है। स्व० श्री रावसाहब पटवर्धन की याद करते हुए उन्होंने कहा कि अभी एक निर्मल पुष्प रावसाहब पटवर्धन भगवान के चरणों में समर्पित हो गये। उन्होंने अपनी उम्र का ध्यान रखते हुए तथा अपने साथियों को इस संसार से विदा लेते देखकर कहा कि बचपन के मित्र 'क्यू' छोड़कर चलते जा रहे हैं। इसे देखते हुए बाबा ने कहा कि उनके जीवन की गंभीरता भी दिनोदिन बढ़ती जा रही है। इस अवसर पर देश के अनेक नेताओं की आयी हुई शुभकामनाएँ पढ़ी गयीं।

मध्यप्रदेश के दतिया जिलादान की सूचना इस मौके पर प्राप्त हुई। राँची जिले के सदर अनुमंडलदान तथा सिहभूम के २ प्रखण्डों के दान की घोषणा की गयी।

बिहार ग्रामदान प्राप्ति समिति ने निश्चय किया है कि अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन तक पूरी ताकत लगाकर राज्यदान पूर्ण करने की भरपूर कोशिश की जायेगी। ३० सितम्बर तक सिहभूम जिले का जिलादान पूर्ण होगा, ऐसी सम्भावना है। सन्ताल परगना का २ अक्तूबर तक जिलादान पूर्ण होगा या नहीं तो सम्मेलन तक तो पूर्ण हो ही जायेगा।

ग्रामदान प्राप्ति समिति के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए विनोबाजी ने कहा कि लोकतंत्र की दृष्टि से तथा सर्वोदय की दृष्टि से भी सर्वसम्मत निर्णय का स्वतंत्र तथा महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः पूरे देश में हर स्तर पर कार्यकर्ताओं को इसका प्रयास करना चाहिए।

शाम को राँची मारवाड़ी कालेज की एक सभा में श्री जयप्रकाशजी ने विगत क्रान्तियों के परिप्रेक्ष्य में सर्वोदय की क्रान्ति की अनिवार्यता को सिद्ध करते हुए इसका विशद विवेचन किया। उन्होंने कहा कि कानून और हिंसा, दोनों समाज-परिवर्तन में असफल साबित हुई हैं, यह बात सिद्ध हो चुकी है। अब उन दोनों मार्गों को छोड़कर अहिंसक मार्ग को अपनाना होगा तभी सही मानी में क्रान्ति चरितार्थ होगी।

उन्होंने तरुणों को सम्बोधित करते हुए तरुण शान्तिसेना की आवश्यकता पर बल दिया। तरुणों की शक्ति समाज-परिवर्तन में लगे ऐसी आकांक्षा उन्होंने व्यक्त की। दुनिया में हो रहे तरुण-विद्रोहों का भी उन्होंने हवाला दिया।

१२ सितम्बर को प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बाबा से मुलाकात की। •

प्राथमिक सर्वोदय मण्डल का गठन

बलिया (उ० प्र०) द्वारा क्षेत्र के लोक-सेवकों की पिछले महीने हुई बैठक में प्राथमिक सर्वोदय मण्डल का गठन हुआ। सर्वश्री पंचदेव तिवारी अध्यक्ष तथा शिवकुमार मिश्र मंत्री और रामाधार सिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।•

आवश्यक सूचना

हमें खेद के साथ यह सूचना देनी पड़ रही है कि श्री राधेश्याम जायसवाल मु० पो०—सआदतगंज, जिला—बाराबंकी, (उ० प्र०) ने सन् १९६१ में 'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक बनाने की रसीद प्राप्त की थी, उसका हिसाब वापस नहीं लौटा रहे हैं और इतने दिनों बाद उन रसीदों पर ग्राहक बनाकर पैसा अपने पास रख ले रहे हैं, हमें नहीं भेजते ; फलस्वरूप उनके द्वारा बनाये गये ग्राहकों को पत्रिका नहीं मिल पाती। हमने लगातार यह चेतावनी उन्हें दी, कि ऐसा गलत काम वे न करें, लेकिन उनका यह गलत सिलसिला अब भी जारी है। इस आशय की सूचना दो-तीन साल पहले भी प्रकाशित की जा चुकी है। हम पुनः कार्यकर्ता साथियों, ग्राहक-मित्रों से यह निवेदन करते हैं कि उनके इस गलत कार्य को रोकने में हमारी मदद करें, और रसीद नं० ५३१—५५०, १२७१—१२८०, २५३१—२५५०, १०६५१—१०६७१, १३५०१—१३५२०, १४१३१—१४१४०, १९३५१—१९३७० तक के आधार पर ग्राहक न बनें।

इतनी रसीदें उन्होंने सन् १९६१ में हमारे लखनऊ-स्थित सर्वोदय-साहित्य भण्डार से प्राप्त कर ली थीं।

—व्यवस्थापक
पत्रिका-विभाग
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन,

कांगड़ा जिला (हि० प्र०) सर्वोदय मण्डल की बैठक

जिले के संयोजक श्री सत्यपालजी के पत्रानुसार पिछले महीने हुई सर्वोदय मण्डल की बैठक में निष्ठावान कार्यकर्ता श्री लक्ष्मी भाई को सर्व सेवा संघ का प्रतिनिधि सर्वसम्मति से चुना गया।•

वार्षिक शुल्क : १० रु०, (सफेद कागज। १२ रु०, एक प्रति २५ पै०), विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।